यदुराज

आचार्य नरेन्द्र शास्त्री

मधुशाला प्रकाशन
ISO 9001:2015 प्रमाणित प्रकाशन
गुणवत्ता में कोई समझौता नहीं

यदुराज

YADURAJ

विधा : उपन्यास

© सर्वाधिकार सुरक्षित : आचार्य नरेन्द्र शास्त्री

प्रकाशक

मधुशाला प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड

राजकीय अस्पताल के पास

विकास नगर, भरतपुर – 311001

Email : madhushalaprakashan@gmail.com

Website : www.madhushalaprakashan.com

Contact us. 7665880322

मूल्य : 220 रुपये

पृष्ठ : 100

संस्करण : प्रथम संस्करण 2023

ISBN : 978-81-963359-6-0

टंकण एवं पृष्ठ सज्जा : मधुशाला प्रकाशन

मुद्रक : साईं ब्लेसिंग्स प्रेस

नोट : इस पुस्तक में व्यक्त किये गए सभी विचार, तथ्य और दृष्टिकोण लेखक के स्वयं के हैं तथा इस पुस्तक को प्रकाशित करते समय पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी त्रुटि होना स्वाभाविक है, इसके लिए प्रकाशन की कोई जवाबदेही नहीं है।

आभार

ईश्वरीय कृपा, स्वर्गीय पिता श्री रामकृष्ण यादव, माता श्रीमती उर्मिला देवी, धर्मपत्नी ज्योति यादव, दादाजी श्री रामदत्त यादव, दादी श्रीमती विमला देवी, चाचा श्री धर्मेन्द्र यादव, मौसी कान्ता देवी, गुरुदेव श्री प्रेमप्रकाश शर्मा, गुरुदेव श्री दाताराम गुर्जर, गुरुदेव श्री डॉ. मानव शर्मा, भाई योगेश अध्यापक, भाई नरेन्द्र सीरयाणी, भाई शेखर, भाभी ज्योति सचिन व्यास, भाई अजय वर्मा, सर विकाश चौधरी, किरण मेम, भावना गौतम मेम, व अन्य सज्जन महानुभावों व शुभचिंतकों के आशीर्वाद व मार्गदर्शन ही लिखने के लिए प्रेरित करता है। बहन सरिता, अनिता, प्रियंका, पूनम, सुनील कुमारी, आप सबने यथासमय मेरे लेखन को सराहकर मुझे हर समय लिखने के लिए प्रेरित किया। आप सबका आभार तथा मधुशाला प्रकाशन परिवार का आभार जिसके माध्यम से पुस्तक हजारों – लाखों लोगों तक पहुंचेगी।

लेखक की कलम से

यदुराज उपन्यास को पढ़ रहे पाठको को नमस्कार। उपन्यास साहित्य की अति प्रसिद्ध विधा है। इस उपन्यास के लेखन से पूर्व देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में मेरे समसामयिक मुद्दों पर आधारित आर्टिकल आते रहते थे, जिनको आप सबने ढेर सारा प्यार दिया। उपन्यास को लिखते समय विराम चिह्नों, मात्राओं इत्यादि का पूर्ण सावधानी से प्रयोग किया गया है, फिर भी मानव का स्वभाव होता है त्रुटि करना अगर भूलवश कुछ गलती रह जाये तो पाठकगण उसे मेरी अल्पज्ञता मानकर मेरी इस धृष्टता को क्षमा करे। आज के इस डिजिटल युग में पाठक जिस पुस्तक को पढ़ रहा है उसके लेखक से सम्पर्क करना भी सहज हो गया है, पाठक मेरी गलतियाँ व सुझाव मुझे सीधा भेज सकते है जिससे भविष्य में उन गलतियों से बचा जा सके। नमस्कार के साथ आप सबके आशीर्वाद का आकांक्षी, आशा व उम्मीद करता हूँ जिस भाव से मैंने इस उपन्यास को लिखा है उसी भाव से आप पढ़कर भावार्थ ग्रहण करोगे और पुस्तक आप सबके आशीर्वाद से हिंदी भाषी पाठको के अतिरिक्त अन्य भाषाओ में अनुदित होकर अन्य भाषी पाठको तक भी सहज पहुंचेगी।

यदुराज नरेन्द्र शास्त्री

अध्याय - १

बद्री प्रसाद उपाध्याय की कक्षा से आज भी पूर्ववत की तरह जोर - जोर से बच्चों के पढ़ने की आवाज़ आ रही थी, एक बच्चा पहाड़े बोलता, दूसरे बच्चे उसके पीछे पीछे दोहराते, दो एकम दो, दो दूनी चार जिससे पास के रास्ते से गुजरता कोई भी व्यक्ति समझ सकता था की यहाँ अवश्य पाठशाला लग रही है। पाठशाला के पास से गुजरते हुए पांडे जी ने देखा की एक 7 - 8 साल का बच्चा विधालय की दीवार के पास चिपक कर खड़ा है, वो बच्चा कभी झाँक कर विधालय की तरफ देखता तो कभी रास्ते की तरफ, ऐसा वो इसलिए करता ताकि उसकी चोरी पकड़ी ना जाए और निगाह रख सके की कौन इधर आ रहा है कौन - कौन इधर से जा रहा है जैसे ही कोई परिचित उधर से गुजरता वो बच्चा इधर उधर घूमने लगता ताकि वहाँ से गुजरने वाले को यही लगे की ये अपने किसी काम से इधर से गुजर रहा है, पर आज तो पांडे जी ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया है।

पांडे जी जैसे ही पास आये बच्चे के चेहरे का रंग उड गया। पांडे जी ने उसका हाथ पकड़ा और ले जाने लगे उसे पाठशाला में। बालक भी अपना पुरा जोर लगाकर छुड़ाकर भागने की कोशिश कर रहा था परन्तु पांडे जी के जोर के सामने उस बच्चे की क्या बिसात जो खुद को छुड़ाकर भाग सके। पांडे जी उसे लेकर सीधा हेडमास्टर साहब के ऑफिस गये और थोड़ा जोर से कड़क कर हेडमास्टर साहब से बोले मास्टरजी आपको तनख्वाह बच्चों की पढ़ाई और उनका ध्यान रखने की मिलती है या फिर ऑफिस में कुर्सी तोड़ने की।

हेडमास्टर साहब थोड़ा मुस्कुराते हुए चपरासी से बोले करण सिंह पांडे जी के लिए पानी लाइये।

मैं पानी पीने नहीं मास्टरजी शिकायत लेकर आया हूँ पांडे जी तपाक से बोले,

शिकायतें भी होती रहेगी पांडे जी ! आप पहले थोड़ा सा शांत होइए, पानी पीजिये फिर फरमाइये।

लाओ दो पानी कहते हुए गुस्से से पानी का गिलास पकड़ा, पानी पीकर थोड़ा शांत होकर पांडे जी बोले, "मास्टरजी मैं पाठशाला के पास से निकल रहा था तो मैंने देखा ये लड़का पाठशाला के बाहर वाली दीवार के पास बांस के पेड़ के समीप खड़ा था, लगता है ये शायद विधालय से भाग गया था।"

ये तो अच्छा हुआ शाला के पास से गुजरते हुए मेरी इस पर निगाह पड़ गई, तो मैं सीधा इसको आपके पास ले आया। वैसे किसकी औलाद है ये जो पढ़ाई में कम और आवारागर्दी में ज्यादा ध्यान रख रही है पांडे जी ने शिकायत करते हुए कहा।

मास्टरजी - पांडे जी क्या आप इसे नहीं जानते।
पांडे जी - नहीं, मैं इसे जानू ये ऐसा क्या किसी लाट साहब का बच्चा है।
मास्टरजी - लाट साहब का ही समझिये।
पांडेजी - लाट साहब के बच्चे ऐसे सड़को पर आवारागर्दी नहीं करते।
आखिरकार मैं भी जानना चाहूंगा की ये बच्चा है किसका।
मास्टरजी - ये बच्चा मजिस्ट्रेट साहब पंडित कृष्णमूर्ति जी द्विवेदी का बेटा यदुराज है।
पांडे जी - ओह ! तो ये मजिस्ट्रेट साहब के साहबज़ादे है,

लेकिन मास्टर जी एक बात मैंने देखी जो माता - पिता ज्यादा काबिल होते है उनके नाकाबिल संताने पैदा होती है, ठीक ऐसा ही अपने कृष्णमूर्ति जी के साथ हो रहा है।

ऐसी बात नहीं है पांडे जी, अभी तो यदुराज 7 - 8 बरस का ही हुआ है, इतनी सी कम उम्र में क्या अंदायजा लगाया जा सकता है की ये बच्चा लायक निकलेगा या नालायक। खैर पांडे जी आप समाज के एक जिम्मेदार नागरिक, अच्छा हुआ इतना तो पता चला की पदमपुरा गाँव में भी कुछ जिम्मेदार लोग रहते है, वरना हम तो अभी तक यही समझते थे की यहाँ सब अपने काम से काम रखते है, समाज में क्या हो रहा है ? देश में क्या हो रहा है ? किसी को किसी से कोई मतलब नहीं ? 'खैर आपके जिम्मेदारी भरे कदमो के लिए आपका शुक्रिया'।

पांडे जी चले गये,
उनके जाने के बाद हेडमास्टर श्रीकांत वर्मा ने मास्टर बद्रीप्रसाद उपाध्याय जी को बुलाया और समझाते हुए कहा, देखो बद्रीप्रसाद जी ! अभी ये बच्चे छोटे है, अबोध है, नासमझ है इनका मन कोरी सलेट की तरह है आप उस पर जो लिखना चाहोगे वही तो लिखा जायेगा,
अब ये तो आप पर डिपेंड करता है की आप उनके मन पर क्या लिख रहे हो ?
किस तरह लिख रहे हो ?
अगर आप सकारात्मक भाव से लिखोगे तो देश को समुन्नत बनाने वाले राष्ट्रवादियों को तैयार करोगे।
यदि नकारात्मक भाव से लिखते हो तों फिर आप विद्रोह और द्वेष को पनपाकर चलने वाले बालको का निर्माण करोगे।

श्रीकांत वर्मा की बातों को सुनकर बद्रीप्रसाद उपाध्याय जी अपनी कक्षा में चले गए ।
आज तो इस यदुराज के बच्चे की खैर नहीं, इसकी वजह से आज मुझे कितना सुनना पड़ा, अरे मजिस्ट्रेट का बच्चा है तो कोई इसका मतलब ये तो है नहीं की इसकी वजह से किसी को भी सुनना पड़े। जब तक चार - पांच डंडे मार - मार कर तोड़ नहीं दु तब तक मेरा नाम भी बद्री नहीं।
एक तो ये कक्षा में नहीं आता, आता है तो इसको कुछ आता - जाता नहीं।
उपर से मजिस्ट्रेट बाप का ये रौब की कक्षा में किसी को भी डांट पड़वा दे।
यदुराज इधर आ! घुडक जमाते हुए बद्रीप्रसाद ने यदुराज को बुलाया,
धर्मु बेटा तू जाकर दो चार अच्छे - अच्छे डंडे ले आ।
आज देख मैं इसका क्या हाल करता हूँ।
धर्मु जो कक्षाध्यापक का मुँह लगा विधार्थी था, कब से अपने गुरु के आदेश कि प्रतीक्षा कर रहा था,
आनन फानन में जाकर बांस कि पतली - पतली पांच - छह सरकंडी ले आया, जो देखने में तो पतली जरूर थी लेकिन उनकी मार असहनीय थी।

अध्यापक जी जमाने लगे डंडा, 'ऐसे नहीं सुधरेगा तू, आजकल बहुत सर चढ़ गया है, आज मार पड़ेगी तो आ जाएगी अक्ल ठिकाने' और जब तक हाथ लाल जर्द नहीं हो गये तब बालक को छड़ी की मार पड़ती ही रही।

अध्यापक जी के जाने के बाद यदुराज ने हाथों को सहलाया, साथियों ने संवेदना जताई जो अध्यापक जी के कक्षा में रहते बिल्कुल प्रकट नहीं हो रही थी। रमेश यदुराज के हाथों पर फूंक मारते हुए बोला" दर्द हो रहा है क्या यदु, ये धर्मू भी कैसा निर्दयी है, अपने ही साथियों की पिटाई करवाते

हुए इसे जरा सी भी शर्म नहीं आती, देख तो ! कैसी तीखी छड़ी लाया था, इसको तो कोई काम है ही नहीं, सारे दिन मास्टरों की जी हुजूरी करता रहता है, और अपने संगियों को पिटवाता रहता है, जी हुजूरी करके खुद बच जाता है बस हम सब लपेटे जाते है, देख लेना एक दिन हम सब मिलकर इसकी तबियत ऐसी सही करेंगे की इसका बरसो का हिसाब हो जायेगा।

यदुराज - रहने दे रमिया वो भी अपना ही साथी है, कुछ गलती मेरी ही होगी, मैं ही तो पाठशाला के पास वाले बांस के पेड़ के नीचे खड़ा था। पर मैं भी क्या करू यार ? मैं कोई शौक से वहा थोड़ी खड़ा होता हूँ, पाठशाला आते समय एक अजीब सा डर मेरे मन में रहता है मुझे लगता है की मैं यहाँ खुल कर सांस नहीं ले रहा हूँ अब तूम्ही बताओ रमिया मैं क्या करू ?

रमेंश - तू चिंता ना कर दोस्त, सब अच्छा होगा, देखना एक दिन तुम इस वातावरण से इतना घुल मिल जाओगे की तुम्हें यहाँ से जाने पर, तुम्हारा मन मचलाएगा।

यदुराज - ठीक है रमेंश, अध्यापक जी ने मुझे डंडे से मारा ये बात मेरे घर मत बताना नहीं तो मुझे और मार पड़ेगी।

रमेंश - ठीक है भाई नहीं बता रहा।

कुछ समय बाद छुटी होती है सब अपने - अपने घर चले जाते है। जैसे ही यदुराज घर के अंदर दाखिल होते है पंडित कृष्णमूर्ति द्विवेदी जी अपने अतिथि कक्ष के सामने वाले बाग़ में आराम कुर्सी पर बैठकर सिगार का कस खींच रहे थे। नौकर बलिया पंखा झल रहा था। जैसे ही यदुराज दबे -दबे कदमो से अंदर जाने लगा नौकर बलिया ने फुसफुसाते हुए कहा यदुराज...यदुराज....। आवाज़ सुनते ही द्विवेदी जी सचेत होकर बैठे। आवाज़ दी, यदुराज इधर आओ !

जी पिताजी, डरा सहमा सा यदुराज अपने पिता के पास जाता है।
कृष्णमूर्ति - आज स्कूल में क्या हुआ था, पांडे जी ने क्या किया
यदुराज- मैं पिताजी, वो, वो .....।
कृष्णमूर्ति - क्या वो वो, पुरी बात बता, मुझे सब पता है, मुझे पांडे जी ने सब बता दिया। क्या जरूरत थी तुम्हें स्कूल से बाहर छुपने की ? क्या कमी है हमारे घर में ? तुझे सारी सुविधा दे रखी है इसके बावजूद तू पढ़ाई से जी चुराता है। ये तो अच्छा है की तुम्हारे हेडमास्टर साहब श्रीकांत जी भले आदमी और मेरे मिलने वाले है, नहीं तों तेरी शिकायतों से तों मुझे रोज स्कूल जाना पड़े।

बेटे तों आखिरकार हम भी किसी के थे, और सुविधा तों कुछ थी ही नहीं, बाप दादा तों यही कहा करते थे की क्या करेगा पढ़कर, जजमानी में आई हुई इतनी पुस्तैनी जमीन - जायदाद है की सात पीढ़ी भी बैठकर खाये तों भी बचे, लेकिन कृष्णमूर्ति को अपने दम पर चलना पसंद था, मैं पढ़ा और तुम्हारे तों स्कूल भी घर से ज्यादा दूर नहीं है, हमारे टाइम तो हम नदी पार करके 3 कोस जाया करते थे, बरसात में तो नदी पूरे उफान पर रहती थी, मैं फिर भी पढ़ा, और आज सब लोग मुझे न्यायमूर्ति कृष्णमूर्ति के नाम से पहचानते है, अगर जजमानी के चक्करो में ही रहता तों घर से खेतो तक ही मेरी जान पहचान होती, इससे आगे नहीं बढ़ पाता मैं कभी भी। चल अब सुनता क्या है अंदर जा।

कृष्ण मूर्ति जी की विशालकाय हवेली में चारो तरफ प्रवेश के लिए चार दरवाज़े थे। एक दरवाज़े के ठीक सामने बागान था। दूसरे दरवाजे के ठीक सामने सीताराम और लक्ष्मण जी का मंदिर संगमरमर से और उसका ऊपरी गुबंद सोने की झाल देकर बनाया गया था जिसका निर्माण उनके पितामह रामसहाय जी ने करवाया था जहा हर राम नवमी को अखंड रामायण का पाठ चलता था और ये परम्परा रामसहाय द्विवेदी जी के

समय से चली आ रही थी जिसे बाद में इनके बेटे धनसीराम ने और अब पंडित कृष्णमूर्ति जी भी निभा रहे है । तीसरे दरवाजे के ठीक सामने खुला मैंदान था जिसमें कभी - कभी सभा का आयोजन होता था, चौथे दरवाजे को एक गुप्त सुरंग से जोड़ा गया था जो, दरवाजे के ठीक उपर एक घड़िनुमा कील लगाई गई थी जिसको हल्का सा दबाने पर वह दरवाजा बिना आवाज़ किये खुलता था, सुरंग का रास्ता 2 कोस दूर कालिका मंदिर में जाता था जहा विशेष अवसरो पर द्विवेदी परिवार पूजा अर्चना किया करता था। पहले दरवाजे के सामने होल से होते हुए घर का मुख्य दरवाजा जाता था। द्विवेदी जी के जैसा शानदार घर आस पास के पचास गाँवों में भी नहीं था।

कुछ दिनों बाद गाँव में सरपंच के चुनाव होने थे। सब प्रतिनिधि अपने अपने समर्थन में प्रभावशाली लोगो को लेकर घूम रहे थे । पंडित कृष्णमूर्ति जी का पुरा समर्थन भैरूसिंह पांडे को मिल रहा था, हालाँकि वो कचहरी के कामो के कारण उनके साथ व्यक्तिगत रूप से घूम नहीं पाते थे तो भी यदा कदा समय निकालते और आर्थिक रूप से मदद करते। पांडे जी एक जगह खड़े होकर भाषण दे रहे थे, सैकड़ो की तादाद में वहा लोग इक्क्ठा थे, कौतूहूँलवश यदुराज भी देखने गया । पांडे जी अपने भाषण में कह रहे थे "मेरे भाइयो और बहनों, बच्चे भगवान होते है, उन्ही नन्हें मुन्ने बच्चों की खातिर, उन्ही भगवान की खातिर इस बार सरपंची के चुनाव में मुझे जिता देना, मैं वायदा करता हूँ तुम्हारे बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बना दूंगा'।

यदुराज - मन ही मन बड़बड़ाते हुए भगवान होते हैं, और तू आंच भी नहीं आने देगा, उस दिन मेरी तो मास्टर जी से हजामत करवा दी थी, और अब कहता है आंच भी नहीं आने दूंगा, देखो तो साला पांड्या कितना झूठ बोलता है। मन ही मन बड़बड़ाते हुए वो कब जोर - जोर से बोलने

लगा खुद उसे पता नहीं लगा । भीड़ में सन्नाटा पसरा, सबका ध्यान यदुराज पर और वो बोले ही जा रहा है । पास आकर किसी ने कोहनी जमाई, ध्यान टूटा, नजरें उपर उठाकर देखा तो वो स्कूल का चपरासी करनसिंह था । पाठशाला नहीं चलना क्या ? करनसिंह डांटते हुए बोला ।
यदुराज - चल रहा हूँ भाई करणा, जल्दी भी क्या है ।

करणसिंह - तुझे जल्दी नहीं है तों क्या भाई, पाठशाला कोई तुम्हारे समय के हिसाब से तों लगेगी नहीं ।
ठीक है चलो ।

जैसे ही पाठशाला के बाहर पहुँचे तो पाया पाठशाला में आज प्रार्थना लेट तक चल रही थी । लेकिन जैसे ही अंदर गये सब बच्चे टकटकी लगाकर देख रहे थे । दरअसल पाठशाला में कुछ जादूगर जादू का खेल दिखा रहे थे, जिसमें एक बच्चे पर एक कपड़े को ढक देते, कुछ बोलते, और जब पर्दा हटाते तो वो बच्चा गायब मिलता, इसके अलावा भी उस दिन पाठशाला में बहुत से जादू के खेल दिखाए सब बच्चे उन्हें कौतूहूलपूर्वक देख रहे थे । यदुराज की तो मानों आज पलक ही नहीं झपक रही थी वह निर्निमेंष उस खेल को देखता ही रहा, लग रहा था आज वह पहली बार शाला में अपने पूरे मन से उपस्थित है । जादूगर के इसी खेल के क्रम में चपरासी करणसिंह भी हेडमास्टर को कहना भूल गया की आज यदुराज सीधा पाठशाला ना आकर चौपाल पर पांडे जी की सभा में खड़ा था । इसी तरह एक साल बीत गया ।

पाठशाला में दूसरा साल शुरु हुआ । पहली क्लास के बच्चे अब दूसरी क्लास में आ चुके थे । दुसरी क्लास के बच्चे तीसरी क्लास में । कुछ नये चेहरे भी शाला में भर्ती हुए थे । जिनमें एक थी पड़ोसी गाँव भागलपुर के महाजन श्रीपाद जी की सुपुत्री भव्या । अध्यापक जी क्लास में आये,

हाजरी लगाई तो पाया आज 2 छात्र क्लास में नहीं आये, एक तो वो जो अक्सर नहीं आता था यदुराज। दूसरा उसका लंगोटिया नवीन। आनन फानन में स्कूल के चपरासी करणसिंह को बुलाया। क्लास के 5-7 हट्टे कट्टे छात्रों के साथ चपरासी करणसिंह को हिदायत दी की यदुराज और उसका लंगोटिया नवीन जहा भी हो दोनों को फ़ौरन पकड़ कर मेरे सामने हाजिर करो। आज्ञा पाकर सभी विधार्थी और करणसिंह गाँव में जाकर पड़ताल करने लगे। भाई, तुमने कृष्णमूर्ति जी के बेटे और उसके साथ किसी और को देखा है। पास से गुजर रही एक बुढ़िया संतरा के कानों में ये बात पड़ी। हा ! मैंने देखा है। अभी भी वही होगा। पंडिताइन चारुल का पोता और उसका लंगोटिया अभी भी चिमनलाल के घर के पोल के सामने फर्श पर पाठशाला के बस्ते को सिराहने रखकर सो रहे थे। थोड़ा जल्दी करो। अगर मौका चुक गये और उसे भनक लग गई तो भाग जायेगा। जल्दी जाओ सोते हुए को ही धर दबोचो ।

आनन फानन में सभी चिमनलाल के घर पहुँचे। चारो तरफ से घेर कर सब बच्चों और चपरासी करणसिंह ने यदुराज और नवीन को पकड़ लिया और सीधा हेडमास्टर साहब के ऑफिस पर।

श्रीकांत वर्मा - यह सब क्या हो रहा है ? क्यों लाये हो इन दोनों को यहाँ ?

चपरासी - ये दोनों पाठशाला आने के बजाय चिमनलाल की पोल वाली बाहर की जगह पर सोकर आराम फरमा रहे थे। मास्टर बद्रीप्रसाद जी का आदेश था भला हम कैसे टाल सकते थे। ले आये चिमनलाल के घर से उठाकर सीधा यहाँ।
श्रीकांत - क्या जरूरत थी, इन्हे लाने की ?

जब इनका मन पढ़ाई का होता तो ये खुद ही नहीं आ जाते क्या । ठीक है बेटा तुम दोनों क्लास में जाओ हेडमास्टर साहब ने यदुराज और नवीन को कहा।

उन दोनों के साथ साथ क्लास में अन्य बच्चे जो उन्हें पकड़ने गये थे वो भी गये उनके पहुंचते ही बद्रीप्रसाद जी ने कड़वे शब्दों की आग उन पर बरसा दी।

जब उनके कहने का भी उन दोनों ने कोई प्रतिउतर नहीं दिया तो मास्टर जी ने धर्मू को रोज की तरह फिर डंडा लाने भेज दिया।
धर्मू द्वारा लाये गये बांस के मोटे मोटे डंडे से मास्टरजी मार लगाते जा रहे है, और उपदेश देते जा रहे है। अरे मैं कहता हूँ क्या जरूरत है तुम्हें छुपने की, स्कूल नहीं आने की, हम तुम्हें पढ़ाकर कोई तुम्हारा बुरा तो कर ही नहीं रहे। एक, दो, तीन ..... करते हुए मास्टरजी ने नवीन और यदुराज को पूरे तीस डंडे जमाये।

मास्टरजी के क्लास से बाहर जाते ही सब बच्चों ने उन दोनों को घेर लिया। भव्या ने अपनी सखी नीरू से पूछा। ये दोनों रोज ऐसे ही पीटते है क्या ?

नीरू - नवीन तो रोज तो नहीं पीटता, वो तो इस यदुराज के चक्कर में आज ही लपेटे में आया है। हा, ये यदुराज रोज जरूर पीटता है। घर वाले इसे स्कूल के लिए भेजते है और ये रास्ते में ही गायब हो जाता है। कभी चिमनलाल के घर के पोल के पास सोता है तो कभी गाँव की चौपाल में सोता हुआ मिलता है।

भव्या - इसके घर वाले इसे कुछ नहीं कहते क्या ?

नीरू - इसके पिताजी से इसे लगभग हर महीने 2-3 बार तो मार पड़ ही जाती है। बेचारा यदुराज।

जानती हो मैं पिछले महीने नवीन के घर किसी काम से अपनी माँ के साथ गई थी, नवीन के पिताजी पप्पूराम उसे कह रहे थे की क्या जरूरत है तुम्हें उस यदुराज के साथ रहने की। अरे वो तो मजिस्ट्रेट की औलाद है। उसका और हमारा मुकाबला नहीं हो सकता। वो तो अगर नहीं भी पढ़ा तो पुस्तैनी जायदाद इतनी आती है की तेरे जैसे दस पंद्रह को तो नौकर भी रख ले तो ज्यादा फर्क नहीं पड़े।
लेकिन अगर तू नहीं पढ़ा तो खाने के लाले जरूर पड़ जाएंगे।

भव्या - इतना बुरा है क्या यदुराज ?
नीरू - बुरा तो नहीं है,बस उसे पलट कर जवाब देना नहीं आता, मुस्कुराता रहता है, इसलिए सब उसे दोषी समझ लेते है।
भव्या - अच्छा तो ये बात है, देख आज भी उसने उफ़ तक नहीं कहा, तीस डंडे, बाप रे ! तीस डंडे चुपचाप खा लिए। मेरे को तो बेचारे पर बहुत दया आ रही है।
नीरू - चल अब तू ज्यादा दया मत दिखा। इस समय तो छुटी होने वाली है घर चलना है।

टन टन, टन टन टन .... कुछ समय बाद छूटी होती है और सब बच्चे अपने अपने घर चले जाते है। इसी तरह सारे साल की पढ़ाई खत्म होने के बाद एक साल और बीत जाता है।
इम्तिहान के खत्म होने के बाद उसका रिजल्ट आता है। गर्मियों की छुटियो में यदुराज अपनी मम्मी वैदेही देवी के साथ अपने ननिहाल सुरजपुर जाता है। वहा उसके हमजोलियो से इतना घुल मिल जाता है की उसका अपने गाँव लौटने का मन ही नहीं करता है। उसका अपने गाँव

जाने का मन भी नहीं है। वह रोज रोज पाठशाला की पिटाई, और उसके बाद घर आकर अपने पिताजी की पिटाई से दुखी हो जाता है। वैदेही देवी अपना बस्ता तैयार करने में सुबह से लगी हुई थी, यदुराज बिना बताये किसी को घर से दूर सुनसान हवेलियों में अपने एक दो दोस्तो के साथ चला जाता है ताकि आज का दिन तो निकल सके।

शाम को जब वो घर आता है तो उसे खूब डांट पड़ती है। अनमने मन से ना चाहते हुए भी उसे अपने गाँव पदमपुरा लौटना पड़ता है।

यदुराज घर से नहा -धोकर सुबह - सुबह पाठशाला के लिए निकलता है। रास्ते में वो लक्ष्मीनारायण मंदिर वाले बाग़ में जाकर बैठ जाता है। पाठशाला के रास्ते जाते हुए भव्या और नीरू उसे देख लेती है की आज भी यदुराज पाठशाला नहीं जायेगा, उसे फिर से मार खानी पड़ेगी।
भव्या - चल नीरू मंदिर के अंदर बाग़ में चल।
नीरू – क्यों

भव्या - अरे देखा नहीं क्या यदुराज अंदर गया है, शायद वो पाठशाला नहीं जायेगा, वो सोच रहा है की जब छुटी होगी तब वो सब बच्चों को इधर से जाते हुए देख लेगा और उनके साथ ही हो लेगा और घर पहुँच जायेगा,

सबको यही लगेगा की वो पाठशाला जाकर आया है।
लेकिन क्या पता उससे पहले मास्टरजी उसे फिर से और दिन की तरह पकड़ कर मंगवा ले, बेचारे को फिर से मार खानी पड़ेगी।

नीरू - चल, भव्या ! तू कहती है तो चलते है, एक बार समझा बुझा देते है, आगे वो जाने उसकी समझ, अक्ल होगी तो समझ जायेगा, नहीं तो रहे अपने भाग्य पर।

दोनों अंदर जाती है। यदुराज मंदिर के सामने बागान में टकटकी लगाए गुलाब के फुल को देख रहा है। भव्या और नीरू को उसकी पीठ दिखाई दे रही थी।

यदुराज, ओ यदुराज ! नीरू पुकारती है।
यदुराज सीधा होकर खड़ा हो जाता है।
भव्या तुमसे कुछ कहना चाहती है।

ये शायद पहला मौका था जब भव्या यदुराज से बोलने का प्रयत्न करती है, एक साल की पढ़ाई के दौरान तो उसने यदुराज की मास्टरजी से पिटाई के दौरान हमदर्दी ही जताई थी।
यदुराज नीरू की बातों की कोई प्रतिक्रिया नहीं देता है।

सुनों ! एक मधुर सी आवाज़ यदुराज के कानों में आती है। वह इस आवाज़ को पहली बार सुन रहा था।

नजर उठाकर देखा तो एक दस ग्यारह साल की नवबाला जिसके दोनों तरफ चोटी बनाई हुई थी। नीली छींट का घाघरा चोली पहने सामने खड़ी है।
यदुराज जिसको अभी तक अपने 2-3 लंगोटिया यारो के अलावा हर किसी से बात करने में झिझक आती थी,
और खास तौर पर लड़कियो और महिलाओ से तो उसे इतनी शर्म आती थी की वह उनकी आवाज़ से ही दूर रहना चाहता था।

परन्तु भव्या की आवाज़ सुनकर आज यदुराज उसका प्रतिउतर देना चाहता है।

यदुराज - हा कहिये।
भव्या - आप पाठशाला क्यों नहीं जा रहे।
यदुराज - मुझे पाठशाला जाने पर डर लगता है।
मेरा वहा दम घुटता है।

वो वहा जो पढ़ाते है वो मुझे पढना अच्छा नहीं लगता, मैं जो पढना चाहता हूँ वो वहा पढ़ाते नहीं है।
और ऊपर से मास्टरजी मुझे ही छड़ी की सबसे ज्यादा मार डालते है, क्लास में और भी बच्चे है पता नहीं मेरे से क्या खुनस रहती है जो हाथ मलकर मेरे पीछे पड़े रहते है।

भव्या - ऐसी कोई बात नहीं है आप नहीं जानते, जिसे सबसे ज्यादा प्यार करते है डांट भी सबसे ज्यादा उसे ही पड़ती है।
आप नहीं जानते गुरुजी आपसे कितना प्यार करते है।

सबसे ज्यादा प्यार क्लास में आपको ही करते है इसलिए तो आपको सबसे ज्यादा डांटते है।
भगवान भी अपने खास भक्तो को सबसे ज्यादा तकलीफ देता है।

यदुराज - मुझे तो ऐसा नहीं लगा गुरुजी मुझे सबसे ज्यादा प्यार करते है ?

भव्या - तुम्हें नहीं लगा, लेकिन मैंने बद्रीप्रसाद गुरुजी जी को अपनी पाठशाला का चपरासी नहीं क्या करणसिंह उसको कहते सुना की यदुराज तो मेरे बेटे जैसा है, उसे मैं काबिल बनाना चाहता हूँ। भव्या

हालांकि जानती थी की ये बात वो झूठ बोल रही है लेकिन क्या पता उसके इस झूठ से यदुराज का भला हो जाए।

और रही बात पढ़ाई की तो पाठशाला में जो गुरुजी पढ़ाये वो पढ़ लेना, घर जाकर जो तुम्हें अच्छा लगे वो पढ़ लेना।

यदुराज - परन्तु, घर तो पिताजी नहीं पढ़ने देते,
कहते है जो पाठशाला में पढ़ाये वही पढ़ा करो, ये फालतू की चीजे पढ़ने की अभी तुम्हारी उम्र नहीं हुई है।

भव्या - कभी तो तुम्हारे पिताजी बाहर जाते होंगे जब वो बाहर जाए तो तुम पढ़ लिया करना।

यदुराज - अच्छा ये तो बताओ तुम्हारा नाम क्या है ।

भव्या - थोड़ा शर्माकर, मेरा नाम भव्या है।
यदुराज - अच्छा नाम है
भव्या - चलो, अब पाठशाला चलो।
यदुराज - पाठशाला तो आज मैं नहीं जाऊँगा, कल पक्का आ जाऊँगा।
भव्या - नहीं, चलना तो तुम्हें आज ही पड़ेगा।
यदुराज - आज तो मैं नहीं जाऊँगा।
भव्या - मैं भी तो देखु कैसे नहीं जाओगे तुम।
यदुराज - अच्छा, मैं नहीं जाऊँगा तो क्या कर लोगी तुम।
भव्या - अभी दिखाती हूँ,
सीधा यदुराज का हाथ पकड़ कर खींच कर विधालय आ जाती है। पीछे-पीछे नीरू भी आ जाती है।

विधालय में जाते ही बद्रीप्रसाद मास्टरजी फिर यदुराज पर बरस पड़ते है, आज तू फिर लेट आया है, ये तो अच्छा हुआ भव्या और नीरू तुझे जबरदस्ती खींच लाई। वरना तू तो आज भी नहीं आ रहा था।
इधर आ और हाथ आगे कर

भव्या - नहीं गुरुजी, ये आ रहा था किन्तु इसे चला नहीं जा रहा था, इसलिए मैं सहारा देकर ले आई।

मास्टरजी - चल ठीक है तुझे आज आज मैं छोड़ देता हूँ, लेकिन इसका मतलब ये नहीं है तू मेरी निगाह में नहीं रहेगा, या मेरा ध्यान तेरे उपर नहीं रहेगा, मेरा तेरे उपर विशेष ध्यान है, ध्यान रखना इस बात का।

मास्टरजी के जाने के बाद यदुराज भव्या से पूछता है तुमने मास्टरजी से झूठ क्यों बोला ?

भव्या - अगर मैं झूठ नहीं बोलती तो मास्टरजी तुझे मारते।
यदुराज - लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं की तुम झूठ बोलकर पाप करो।
भव्या - 'अगर तुम्हें बचाने के लिए हजार झूठ बोलकर हजार पाप भी करने पड़े तो मैं उन हजार पापों को करने को तैयार हूँ ।
यदुराज - अच्छा, सच में ऐसा करोगी तुम।
भव्या - कभी वक्त पड़े तो आजमा लेना।
यदुराज - फिर ठीक है, कभी वक्त पड़ा तो जरुर आजमाऊँगा।
इसके बाद दोनों एक साथ हँस पड़ते है।

एक दिन भव्या ज्यादा व्यस्त रहने के कारण गृहकार्य करना भूल गई, मास्टरजी कॉपिया चेक करने लगे तो भव्या का गृहकार्य नहीं किया हुआ

था। मास्टरजी गुस्से से भव्या से कहने लगे खड़ी हो जा, आज तो तेरी खैर नहीं, इस यदुराज वाली पट्टी पर बैठते बैठते तूने इसकी पट्टी कब पढ़ ली पता ही नहीं चला। आज तो मैं तुझे भी सुधार कर रहूंगा। जा धर्मू एक डंडा ले आ।
धर्मू आनन फानन में डंडा ले आया।

यदुराज - मास्टरजी ! भव्या से कुछ मत कहना, जो कहना है मेरे से कह लो, इसने तो गृहकार्य किया था, मैंने ही इसकी कॉपी फाड़ कर फेक दी।
यदुराज आज पहली बार झूठ बोल रहा था और वो भी भव्या को बचाने के लिए।
भव्या - नहीं मास्टरजी, मैंने गृहकार्य नहीं किया, ये ऐसा इसलिए कह रहे है ताकि मार नहीं पड़े।

मास्टरजी - आज मार तो तुझे पड़ कर ही रहेगी भव्या, मैं भी तो देखु आज तुझे कौन बचाने आता है। जैसे ही मास्टरजी ने भव्या को मारने के लिए डंडा उठाया यदुराज तुरंत मास्टरजी के हाथ से डंडा छीन कर खिड़की के पीछे से भाग गया। मास्टरजी के 2-3 पक्के वाले चेले यदुराज के पीछे - पीछे भगे। सामने एक तकरीबन 6 फ़ीट उच्ची दीवार थी यदुराज उस दीवार को कूद कर भग गया, चेलो से वो दीवार कुदी नहीं गई और वो धड़ाम - धड़ाम करके नीचे गिर गये। भागता भागता सरसो के खेत में जाकर ओझल हो गया। उसने शाम तक का इंतजार किया। शाम को जब छुटी हुई तब वह भी सब बच्चों के साथ हो लिया।

यदुराज घर नहीं पहुंचा उससे पहले पाठशाला के चपरासी करणसिंह द्वारा उसकी शिकायत उसके घर पहुंच चुकी थी। यदुराज शाला से छुटी होने और घर जाने के दरम्यान जो समय लगता था उसी समय के हिसाब से घर पहुंचा ताकि घर वालों को ये नहीं पता लगे की वो विधालय से आज

भी भाग गया था। बागान के सामने आरामकुर्सी पर कृष्णमूर्ति जी एक हाथ में चाबुक लेकर दूसरे हाथ से उसको बार - बार निरीक्षित कर रहे थे। चपरासी करणसिंह और घर का नौकर बलिया हाथ बांधे खड़ा था। जैसे ही यदुराज घर में दाखिल हुआ उसकी निगाह चाबुक और करणसिंह पर एक साथ पड़ी। वह समझ गया था की अब उसकी शिकायत घर पहुंच चुकी है और उसके पास अब बचने का कोई चारा नहीं है। वह नजर झुकाये चुपचाप अंदर जाने लगा। लेकिन अचानक से कृष्णमूर्ति जी आ खड़े हुए। ऐसे नजरें झुका कर कहा जा रहा है। यदुराज ने कोई प्रतिउतर नहीं दिया।

कृष्णमूर्ति - मैंने कुछ पूछा है, आज पाठशाला में क्या किया ? मास्टरजी का डंडा छीन कर और धक्का देकर क्यों भागा ।

धक्का तो मैंने नहीं दिया, हालांकि डंडा छीनकर जरूर भागा था यदुराज मन में सोचता हुआ बोलने की कोशिश करने लगा, किन्तु मारे झिझक के उससे बोला नहीं गया।

मन ही मन करणा को जी भरकर गाली देता रहा, की मैंने इसका क्या बिगाड़ा है, पाठशाला का चपरासी है तो पाठशाला तक रहे, घर में आकर भी मुझे पिटवाने के बहाने ढूंढने लग गया । हाय राम ! झूठ बोलते हुए इसे जरा सी भी शर्म नहीं आती, मैंने सिर्फ डंडा छीना और इसने एक बात की दो बात लगाकर घरवालों को बता दी।

अब तक तो मैं इसकी उम्र का लिहाज करता रहा लेकिन जब हिसाब करने लायक हो जाऊँगा तो इसका हिसाब फुरसत से करूंगा, इसकी वर्षो की तबियत हरी हो जाएगी।
वह खामोश खड़ा सुनता रहा।

कृष्णमूर्ति जी ने चाबुक की मार लगाना शुरु किया, यदुराज चुपचाप चाबुक की मार खाता रहा, मुह से उफ़ तक नहीं निकला। परदादी जमना देवी जो लगभग जीवन की अंतिम अवस्था में थी, अपना चश्मा ठीक करते हुए आई और यदुराज को गले लगा लिया और कृष्णमूर्ति को डांटते हुए बोली निर्दयी जरा भी दया नहीं आती, इतने मासूम से मेरे पड़ोते पर चाबुक चला रहा है। धनसिया ने भी क्या कभी तूझ पर चाबुक चलाये थे क्या ?

यदुराज अपनी परदादी के लिपट कर फफक फफक कर रो पड़ा।
अरे चुप हो जा बेटा, तू तो समझदार है, समझदार बच्चे ऐसे नहीं रोते है। चाबुक की मार इतनी असहनीय थी की यदुराज से बैठा भी नहीं जा रहा था। शरीर पर जगह जगह नीले निशान हो गये थे। मार ज्यादा पड़ने की वजह से शरीर में रात में ताप देकर बुखार आ गया था। रातभर परदादी जमना देवी, दादी चारुला देवी, माताश्री तीनों घर की लक्ष्मिस्वरूपा देवी अपने लाडले पड़ोते, पोते, और बेटे के पानी की पट्टिया भिगोकर लगाती रही। रात के आखिरी पहर में पड़दादी और दादी को थकान की वजह से नींद आ गई किन्तु माँ अपने बेटे के पास बैठी रही। माँ की ममता थोड़ी और ज्यादा बैचेन हुई तो बेटे का सर उठाकर अपनी गोद में रख लिया और बालो में हाथ सहलाने लगी, बेटे को नींद आ गई। लेकिन वो नींद में भी कुछ बड़बड़ा रहा था। माँ ने थोड़ा ध्यान लगाकर सुनने के लिए कानों को छाती के पास ले गई। "नहीं गुरुजी" भव्या ने तो गृहकार्य कर लिया था मैंने ही इसके पेज फाड़ दिये, डंडे लगाने है, मार लगानी है या जो भी सजा देनी है मुझे दो। भव्या निर्दोष है उसको छोड़ दो। माँ को समझते देर नहीं लगी, अच्छा तो ये वही भव्या है जिसकी वजह से मेरे लाडले को गुरुजी को धक्का देकर भागना पड़ा और घर पर इसकी पिटाई हुई। एक बार ये भव्या नाम की आफत मेरे सामने आ जाये फिर देखना मैं

इसकी क्या खातिर करती हूँ। तबियत ज्यादा खराब होने की वजह से यदुराज पाठशाला नहीं जा पाया । भव्या ने देखा यदुराज नहीं आया, आज मास्टरजी भी उस पर गुस्सा नहीं थे, ना ही अपने उदंड चेलो की सेना को उसका पता लगाकर पकड़ कर लाने के लिए भेजा । भव्या के मन में सैकड़ो सवाल चल रहे थे आखिरकार आज यदुराज आया नहीं तो क्यों नहीं आया । एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीसरे दिन भव्या ने अपनी सखी नीरू से कहा - ' नीरू देख तो ! यदुराज आजकल पाठशाला नहीं आ रहा, कही उसने पढ़ाई तो नहीं छोड़ दी।

नीरू - ऐसी तो बात नहीं होनी चाहिए, वो जरूर ही किसी मुसीबत में होगा।

भव्या - नहीं, नहीं ; भगवान करे वो किसी मुसीबत में नहीं हो
एक काम करे नीरू आज क्यों ना हम दोनों छुटी के बाद या आधी छूटी में यदुराज के घर चलते है उसे देख भी आएंगे।
कैसा है वो

नीरू - ठीक है भव्या।
आधी छुटी में दोनों यदुराज के घर जाती है।
सामने के गेट पर पहरा देने वाला पवन देशमुख तम्बाखू और पान खाने बगल में चला गया था क्योंकि पहरा देते समय तम्बाखू खाना मना था। इसलिए वो चोरी छिपे तम्बाखू खाने गया था । इसी दौरान भव्या और नीरू घर के अंदर प्रवेश कर गई। हालांकि उन्हें इस बात का पता नहीं था की घर पर कोई पहरेदार है । थोड़ा अंदर गई तो घर की कामदार पुष्पा बाई झाड़ू पोंछा के लग रही थी। नीरू ने उससे पूछा की यदुराज कहा है। इशारे से उसने यदुराज का कमरा बता दिया।

दोनों यदुराज के कमरे में पहुंच गई। वहा पहुंच कर देखा तो यदुराज पलंग पर लेटा हुआ है और ठंडी पट्टी सर पर रखी हुई है। नीरू ने आवाज़ दी यदुराज। एक चिर परिचित सी आवाज़ कानों से सुनकर यदुराज झट उठकर बैठा हुआ। आँखे खोलकर सामने देखा तो भव्या और नीरू खड़ी है।

यदुराज - भव्या तुम, यहाँ !

भव्या - आ नहीं सकती क्या ?

यदुराज - आ क्यों नहीं सकती, तुम्हारा ही तो घर है।

ये बताओ जब तुम सामने के रास्ते से आई तो तुम्हें पहरेदार ने रोका नहीं क्या ? उसने तुमसे पूछा नहीं क्या की किस से मिलना है ?

भव्या - नहीं तो, जब हम अंदर आये तो यहाँ कोई पहरेदार नहीं था।

यदुराज - पवन देशमुख शायद तम्बाखू खाने गया, इसलिए उसकी शायद तुम पर नजर नहीं पड़ी।

भव्या - आपको मेरा आना अच्छा नहीं लगा शायद, तभी सोच रहे हो पहरेदार होता तो रोक लेता।

यदुराज - ऐसी बात नहीं है भव्या तुम्हारा आना मुझे सुकून दे रहा है।

भव्या - अच्छा ये बताओ पिछले 2 दिन से पाठशाला क्यों नहीं आये।

यदुराज - कुछ नहीं भव्या, ऐसे ही तबियत खराब हो गई थी।

भव्या - मैं भी तो देखु, जैसे एक कुशल वैध नब्ज जांचता है वैसे ही हाथों की नब्ज जांचती है। तुम्हें तो बुखार है

अब ज्यादा बड़बड़ मत करो चुपचाप लेट जाओ। मैं तुम्हारा पैर और सर दबा देती हूँ।

यदुराज - हँसते हुए ही ही ही .....

तुम मेरा सर दबाओगी,

तुम मेरा पैर दबाओगी।

तुम्हें पाप नहीं लगेगा क्या ?

भव्या - जब आप मेरे लिए मार खा सकते हो,
तो मैं आपका सर क्यों नहीं दबा सकती।
नीरू चुपचाप बैठी रहती है।

भव्या हल्के हाथों से यदुराज का सर दबाती है, सर दबाने के बाद वो पैर दबाने लगती है। इतने ही समय में यदुराज की माताश्री वैदेही देवी उसके लिए दोपहर का खाना लेकर आ जाती है। सामने निगाह जाती है तो देखती है उसके लाल की जितनी ही उम्र की एक अत्यंत सुंदर किशोरी उसके पैर दबा रही थी। मन को थोड़ी शांति मिलती है। पास जाने पर भव्या और नीरू उसके चरण छुती है। नीरू प्रश्न पूछती है चाची जी ये सब कैसे हुआ ?

यदुराज परसो तक तो भला चंगा था, फिर अचानक से इतना बीमार कैसे हुआ।
वैदेही - क्या बताऊ बेटी, मेरे बेटे के क्लास में कोई भव्या नाम की छोरी पढ़ती है। उसकी पिटाई हो रही थी तो मेरा बेटा मास्टर की छड़ी छीन कर भाग गया। जिसकी वजह से इसके पिता ने इसे चाबुक से मारा। इसी से इसके बुखार आ गया। अरे ये तो पागल है, कुछ भी कर देता है । अगर वो चुड़ैल मेरे सामने आ जाये तो मैं उसका मुँह नोंच लु। भव्या की तरफ देखते हुए, एक तुम हो जो कितने मन से यदुराज की दवा दारु कर रही हो। एक वो चुड़ैल है जिसकी वजह से मेरे जिगर के टुकड़े का ये हाल हुआ। अगर वो चुड़ैल मेरे सामने आ जाए ना तो उसका मुँह नोंच खाऊ।
यदुराज - ये तुम क्या कह रही हो माँ, कुछ भी अनाप सनाप बोले जा रही हो।
वातावरण में सन्नाटा पसरा। दों मिनट की चुपी रही।
निस्तब्धता और चुपी को तोड़ते हुए आँखो में आंसु लिए भव्या वैदेही के सामने आ खड़ी हुई।

आपकी गुनहगार आपके सामने हाजिर है, नोंच लीजिये मेरा मुँह।

वैदेही - कैसी बात कर रही हो बेटा, ये सारा कसूर तो उस भव्या का है तुम खुद को दोषी क्यों मान रही हो।
भव्या - जी मैं ही भव्या हूँ ।
वैदेही - चौकते हुए, क्या ? नहीं तुम भव्या नहीं हो सकती।
भव्या - मैं भव्या ही हूँ, और आपको ऐसा क्यों लगता है की मैं भव्या नहीं हो सकती।
वैदेही - मैंने सुना है की वो भव्या नाम की लड़की ने मेरे बेटे को ऐसे ही पिटवा दिया।
नीरू बीच में बात काटते हुए नहीं- नहीं चाची जी, आपको जरूर कुछ ना कुछ गलतफहमी हुई है या किसी ने ऐसे ही उल्टा सीधा सीखा दिया। वैसे किसने बताई आपको ये बात।
वैदेही - वो तुम्हारी पाठशाला का चपरासी है ना करणसिंह उसने यदुराज के पिताजी को बताई थी।
नीरू - चाचीजी आप नहीं जानती वो करणा कितना बड़ा झूठा है, झूठ बोलता है वो पूरे दिन, पाठशाला में भी तम्बाखू खाने से बाज नहीं आता, उसने 2- 3 बार झूठ बोल कर यदुराज को पिटवा दिया। और तो और चाची जी आप किसी से कहो नहीं तो आपको एक बात बताऊ।
वैदेही - बताओ, मैं किसी से नहीं बताउंगी।
नीरू - वो चपरासी है ना करणा वो पाठशाला से बच्चों के लिए आने वाले गेहूं में से गेहूं निकाल कर बेचता है और उन रुपये से बीड़ी पी जाता है और तम्बाखू खा जाता है।

वैदेही - नाश हो उस सत्यानाशी करणा का, अब मेरे समझ में आया उसकी लुगाई उसके पास क्यों नहीं रुकी। बुरे काम का बुरा नतीजा। हर किसी की माँ - बहन, बेटियों पर बुरी नजर डालेगा, और चोरी चकारी

करता फिरेगा तो उसे सजा तो मिलेगी ही, क्या गृहस्थी सुख मिलेगा। हाय मेरे बेटे को कितनी बार झूठ बोल - बोलकर पिटवा दिया।

अच्छा ठीक है चाची मैं चलती हूँ भव्या ने कहा।

वैदेही - चाची नहीं तू मुझे माँ कहा कर।

भव्या - ठीक है तो माँ मैं चलती हूँ।

वैदेही - अच्छा सुनों, यहाँ आती रहा करो, इस घर को अपना ही घर समझो, और यदुराज को पाठशाला तुम लेकर जाओ तो अच्छा रहेगा।

भव्या और नीरू चली जाती है। वैदेही उसे गली के आखिरी छोर तक छत से जाती हुई देखती है।

वैदेही, ओ वैदेही ! चारुल देवी का स्वर वैदेही के कानों में पड़ता है।

वैदेही - हा, माँ जी !

चारुल - कहाँ खो गई

वैदेही - कही नहीं माँ जी, वो लड़की देख रही हो नीले सुट वाली।

चारुल - हा देख रही हूँ

क्या हुआ जो ?

वैदेही - वो भव्या है, अपने यदुराज के साथ पढ़ती है। बहुत ख्याल रखती है आपके पोते का। मैं सोच रही थी आप उसें अपने घर की बहू बना देते।

चारुल - कुछ खानदान की इज्जत की भी परवाह है क्या ? उसका कुल, गौत्र मालूम है क्या ?

अगर पंडिताइन भी है तो कोनसी ?

वैदेही - माँ जी वो सब तो मुझे नहीं पता, मैं तो इतना जानती हूँ लड़की अच्छी है, लक्ष्मीस्वरूपा है।

चारुल- सिर्फ अच्छा होना पर्याप्त नहीं होता। शादी - विवाह बहुत सोच समझ कर किये जाते है। समाज में ऊँच - नीच, मान-मर्यादा को देख कर किये जाते है। और घर में चौखट मिलते किवाड़ ही चढ़ाये जाते है, चौखट और किवाड में ज्यादा अंतर हो तो चौखट या किवाड़ दोनों में से

एक खराब हो जाते है। और अभी तो मेरा पोता यदुराज 12 बरस का ही हुआ होगा अभी से उसके विवाह की इतनी क्या फ़िक्र, अभी तो उसे खेलने खाने दे, अभी तो उसके खेलने खाने के दिन है।
वैदेही - शादी की अभी कौन बात कर रहा है माँ जी, मैं तो सोच रही थी रिश्ता पक्का कर लेते है, शादी करते रहेंगे।
चारुल - वो बाद की बात है बाद में देखेंगे।
दोनों अपने अपने काम में लग जाती है।

दूसरे दिन जब कृष्णमूर्ति जी तैयार होकर कचहरी के लिए निकल रहे थे तब उन्होंने देखा दो बालिकाएं घर के दरवाज़े पर खड़ी है, पहरेदार पवन देशमुख ने उनका रास्ता रोक रखा है और उन्हें अंदर नहीं आने दे रहा है।
इन्हे अंदर आने दो कृष्णमूर्ति पहरेदार को आदेश देता है।
दोनों बालिकाएं अंदर आती है। दोनों बालिकाएं कृष्णमूर्ति के चरणों को स्पर्श करके प्रणाम करती है, खुश रहो कृष्णमूर्ति दोनों के सर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देता है। किसकी बेटी हो तुम जो इतने अच्छे संस्कार है।
भव्या - जी मैं भागलपुर के महाजन श्रीपाद जी की कन्या भव्या और ये मेरी सखी पंडित वीरेन्द्र जी की सुपुत्री नीरू है।
कृष्णमूर्ति - पंडितो के बच्चे भीड़ में अलग ही दिख जाते है, खैर भव्या तुमने भी नीरू के साथ इसकी संगत में रहकर बहुत कुछ सीखा है, बस मेरा बड़ा बेटा यदुराज और मेरी बेटी सीमा नीरू की संगति में रहकर इसके जैसे लक्षण ले ले तो मेरा भी जन्म सुधरे।

छोटा बेटा अजयराज तो समझदार है। देखना एक दिन वही मेरे घर का असली वारिश बनेगा, वही मेरे नाम को और बुलंदियों पर लेकर जायेगा।
भव्या - सीखना चाहिए आदमी को पंडित जी, भले ही किसी से भी सीखे।

कृष्णमूर्ति - बड़ी तेज हो तुम बोलने में, खैर ये बताओ यहाँ किससे मिलने आई थी।
भव्या - जी वो माँ जी ने कहा था यदुराज को पाठशाला लेकर जाना।
कृष्णमूर्ति - अच्छा है, अगर तुम ले जा सको तो, मैं तो लेकर जाते - जाते थक गया। ठीक है जाओ अंदर।
दोनों अंदर जाती है, यदुराज जो अभी तक चारपाई पर पड़ा था झट खड़ा हुआ। तुम पाठशाला जा रही हो क्या भव्या ?
भव्या – हाँ

यदुराज - मैं अभी पांच मिनट में तैयार होकर आया, यदुराज तैयार होने जाता है इतने समय में ही उसकी माताजी वैदेही देवी आ जाती है। भव्या और नीरू को देखकर वो खुश होती है। आ गई तुम, ठहरो, मैं तुम्हारे लिए कुछ नाश्ता लगा देती हो।
भव्या - मना करते हुए, नहीं - नहीं माँ जी, इसकी कोई जरूरत नहीं है हम घर से खा पीकर निकले थे।
वैदेही - इसका मतलब तुम इस घर को अपना घर नहीं समझती हो, पराया घर समझती हो।

भव्या - ऐसी तो कोई बात नहीं है माँ जी, बस भूख नहीं है।
वैदेही - अरे जितनी है उतनी खा लो, कामदार बाई पुष्पा को झटपट नाश्ता लगाने को कहा जाता है तबतक यदुराज भी पाठशाला के लिए तैयार होकर आ जाता है। चारों ने मिलकर गरमा - गरम पकौड़ी और चाय पी। उसके बाद भव्या यदुराज का हाथ पकड़े सीधे पाठशाला आ गई। पढ़ाई शरू हुई । आज यदुराज पढ़ने के बजाय अपनी कॉपी में कुछ कर रहा था। हेडमास्टर श्रीकांत पढ़ा रहे थे। जल्द ही उन्होंने ताड़ लिया की यदुराज का पढ़ाई में ध्यान नहीं है। यदुराज बेटा जरा इधर आना। हेडमास्टर साहब ने यदुराज को इशारे से अपनी तरफ बुलाते हुए कहा।

यदुराज उठकर जाने लगा। वो कॉपी भी लेकर आओ बेटा । जी गुरुजी यदुराज डरते डरते कॉपी लेकर पहुँचता है। आज पुरी क्लास को यही लग रहा था की आज तो यदुराज गया काम से। धर्मू आनन फानन में डंडा लाने की तैयारी करने लगा। गुरुजी ने इशारे से उसे बैठा दिया। हेडमास्टर साहब ने कॉपी देखी, गुस्से से यदुराज की तरफ देखा, यदुराज थोड़ा डरकर पीछे सरका, गुरुजी ने मुस्कुराकर उसे गले से लगा लिया। शाबाश मेरा बेटा। इतनी अच्छी कला भरी है तुममें। दरअसल वो यदुराज ने भव्या का चित्र बनाया था। चित्र ऐसा बनाया था की कोई मंजा हुआ चित्रकार भी नहीं बना सके। चित्र देखकर ऐसा लगता था की चित्र अब बोल पड़े।

शाबाश बहुत आगे तक जाओगे तुम। यदुराज को आज माँ, दादी और परदादी के अलावा ऐसा आशीर्वाद पहली बार मिल रहा था। आँखो से अश्रुधारा बह निकली, झुककर गुरुजी के चरण छुए। थोड़ा मजाक करते हुए बोले, दुनिया पागल है कितनी झूठ बोलती है की यदुराज बड़ा नालायक और अकड़ू है मैं तो कहता हूँ इसके जैसा लायक जहान में नहीं है, खैर हीरे की परख जोहरी ही जानता है। खाना खाने के लिए आधी छुटी होती है।

आधी छूटी में यदुराज, नीरू, भव्या, नवीन और रमिया पांचो एक साथ आम के पेड़ के नीचे बैठते है।
भव्या - आप उस दिन मास्टरजी का डंडा छीन कर क्यों भागे ?
यदुराज - तुम्हें कोई हाथ लगाना तो बहुत दूर की बात है, आँख भी दिखाए तो मेरे तो बर्दास्त से बाहर है
भव्या - अच्छा इतनी फ़िक्र करते हो मेरी।
यदुराज – हाँ, उससे भी कही ज्यादा।

भव्या - लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं है की तुम मास्टरजी का ही डंडा छीन कर भाग जाओगे।
यदुराज - तुम्हारे लिए तो मैं जमाने से भीड़ जाऊ और तुम मास्टरजी को ही लेकर बैठी हो।
भव्या - थोड़ा हँसते हुए, पागल, तुम इन दोनों हाथों से जमाने का मुकाबला कैसे करोगे।
यदुराज - मेरे हौसले, तुम्हारी प्रार्थना और माँ के आशीर्वाद से।
इसी तरह कई दिन बीत जाते है।

पदमपुरा को विशेष 2 चीजे बनाती थी, उन दोनों को देखने लोग दूर - दूर से आया करते थे। एक तो पंडित कृष्णमूर्ति की हवेली, दूसरा पदमपुरा का रामनवमी मेंला, जिसमें हजारो की तादाद में लोग इक्क्ठा होते थे। मेंले की पूर्व तैयारी शुरु हो चुकी थी। मैंदान की घास को काटकर खुदाई करके साफ सुथरा किया जा रहा था। यदुराज को कुछ दिनों पहले तक एक ही पंसदीदा शौक हुआ करता था अब उसके पंसदीदा शौक 2 हो चुके थे। उसका पहला पंसदीदा शौक हुआ करता था कहानियों की किताबे पढना, जिसके लिए वो सालभर पैसे जोड़ता और फिर ढेर सारी कहानियों की किताबे ले आया करता था। उसका दूसरा शौक हो गया था चित्रकारी जो उसे कुछ दिनों पहले ही लगा था जब उसने पहली बार भव्या का चित्र बनाया था और हेडमास्टर साहब उसके उस चित्र की तारीफ करते करते थके नहीं थे। यदुराज को पता था मेंले में इस बार भी ढेर सारी किताबे आएगी, और चित्र बनाने की सामग्री रंग व ब्रश। इसलिए वो पहले से ही पैसे जोड़ने लग गया था। हालांकि घर में उसे कोई पैसे नहीं देता था कभी कभी परदादी जमना देवी अपने कमीज की जेब से 10 रुपये का नोंट निकाल कर दे देती थी जिसे वो बड़े इत्मीनान से अपनी गुलक में रख लेता था। इस बार वो मेंले को लेकर बहुत ज्यादा उत्साहित था क्योंकि उसे भव्या के रूप में एक सच्चा साथी मिल गया

था । सोमवार को मेंले का आयोजन होना था । शनिवार को ही पाठशाला में यदुराज ने भव्या और नीरू को मेंले का निमंत्रण दे दिया ।

सोमवार को मेंला लगना शुरु हुआ । नीरू और भव्या यदुराज की बताई जगह पर आ खड़ी हुई । नवीन और रमिया यदुराज के साथ पहले से ही वहा खड़े थे । मेंले में तरह तरह की दुकाने - कई प्रकार के जूस, चाट पकोड़ियों की दुकाने, तरह तरह की मिठाईया, ऊँचे - ऊँचे झूले । मेंले में कोई डरते डरते झूले पर झूल रहा है । कोई तरह तरह के रस पी रहा था । यदुराज की जेब में तक़रीबन 150 रुपये थे । वो भव्या का हाथ पकड़े अपने संगी साथियो के साथ पुस्तकों की दुकान ढूंढ रहा था । जल्द ही उसे पुस्तक की दुकान मिल गई । झटपट यदुराज ने 70 रुपये में अच्छी - अच्छी सात पुस्तके खरीद डाली । 80 रुपये बचा लिए की इनसे भव्या के लिए कुछ खरीदेगा । भव्या का हाथ पकड़े वह एक दुकान पर आ गया। वहा उसने एक छोटी अंगूठी खरीद कर भव्या को दे दी । भव्या उसके मुँह की तरफ देखती रह गई । एक मिनट की खामोशी के बाद. भव्या ने प्रश्न किया ।

भव्या - तुमने सारे रुपियो की किताबे ले ली, फिर जो बचे उससे मुझे अंगूठी लेकर दे दी । तुमने खुद कुछ क्यों नहीं लिया ।

यदुराज जेब में से पैसे निकालते हुए और किताबे दिखाते हुए भव्या को बोला की लिया है ना

ये किताबे और बचे हुए पैसो से लूंगा रंग व ब्रश ।

भव्या - क्या करोगे इन ढेर सारी किताबों का, तथा रंग व ब्रश का ।

यदुराज - इन कहानियों की किताबो को पढ़ूंगा तथा रंग व ब्रश से चित्र बनाऊँगा ।

भव्या - किसका चित्र बनाओगे ।

यदुराज - है कोई, वक्त पड़ने पर बना हुआ चित्र दिखा दूंगा ।

भव्या - एक हाथ से सर पर ऊँगली रखते हुए, पागल ।

फिर पांचो मिलकर एक साथ हँसते है । शाम तक सब अपने- अपने घर लौट जाते है।

अगले दिन विधालय फिर से शुरु हुआ। बद्रीप्रसाद उपाध्याय जी के पीरियड के बाद भव्या ने फुसफुसाते हुए कहा यदुराज....ओ यदुराज ...।

यदुराज – हाँ, भव्या।

भव्या - मैं कल अपने ननिहाल जा रही हूँ, किसी शादी में; तो मैं 2 - 3 दिन विधालय नहीं आऊँगी।

यदुराज उदास होकर, थोड़ा मुँह बनाकर,

क्या कहती हो भव्या ? क्या तुम्हारा जाना इतना जरूरी है ? मैं कैसे रहूँगा और वो भी पूरे तीन - चार दिन।

भव्या - अरे मैं क्या करू, मामा जिद पकड़ कर बैठे है की भव्या को जरूर लाना और मैं लाख जतन करू तो भी मुझे जाना ही पड़ेगा। मम्मी भी कह रही है की भव्या चलना है, मतलब चलना है। अब तूम्ही बताओ मैं क्या करू ?

यदुराज - वो सब तो मुझे नहीं पता, मैं तो सीधी सी एक बात जानता हूँ तुम्हारे बिना ये 3 दिन मेरे विधालय में बहुत भारी रहेंगे।

भव्या - अब कर भी क्या सकते है।

अगले दिन यदुराज विधालय के लिए घर से निकला, रास्ते में उसने सोचा जब भव्या ही नहीं आ रही तो मैं आकर क्या करूंगा। रास्ते में उसने अपने बस्ते को छिपाने के लिए गाँव की सुनसान हवेलियों का रास्ता इख्तियार किया। उधर से गुजरते हुए भैरूसिंह पांडे ने सोचा ये लड़का आखिरकार कर क्या रहा है, कहा जा रहा है ? यह पता लगाने के लिए वह यदुराज के पीछे - पीछे हो लिया। रामलाल की सुनी पड़ी हवेली में यदुराज ने अपने बस्ते को डाल दिया, और यह निश्चिन्त करके की किसी ने नहीं देखा मंदिर की तरफ चला गया। पांडे जी जो अब तक दीवार के पीछे छिपकर उसकी हरकतों को देख रहे थे। यदुराज के जाते ही फ़ौरन बाहर आये और उसके बस्ते में से किताबे निकालकर रद्दी भर

दी। विधालय की छुटी होने के समय के नजदीक जब यदुराज हवेली में अपना बस्ता उठाने गया तो बस्ता अपेक्षाकृत थोड़ा हल्का लगा। खोल कर देखा तो रद्दी कागज़ भरे पड़े है, लेकिन घर तो बस्ता लेकर ही जाना पड़ेगा अन्यथा चोरी पकड़ी जाएगी, कॉपी किताबे फिर लेते रहेंगे। यही सोचकर यदुराज बस्ते को उठाकर घर पहुंच गया। उसके पहुंचने से पहले पांडे जी ने पहुंच कर थोड़ी देर पहले ही सारा हाल बताया था लेकिन यदुराज इस बात से बेखबर था। कृष्णमूर्ति द्विवेदी गुस्से से लाल पीला हो रहे थे यदुराज के पहुंचते ही उसे बोले तुम्हारे बस्ते में से कॉपी और पेन देना। यदुराज जानता था की उसके बस्ते में कॉपी पेन नहीं है इसलिए उसने बहाना बनाया की अभी कपड़े बदल कर आ रहा हूँ आते समय कॉपी और पेन लेते आऊँगा।

मुझे कॉपी और पेन अभी चाहिए द्विवेदी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा, अब क्या करे अब तो चोरी पकड़ी गई, अनमने मन से यदुराज द्विवेदी जी के पास पहुंचा। द्विवेदी जी ने बस्ता खोला तो किताबों की जगह रद्दिया भरी पड़ी थी। पेन की जगह सरकंडो के टुकड़े भरे पड़े थे।

ये सब क्या है द्विवेदी जी ने यदुराज की तरफ गुस्से से देखते हुए कहा।
यदुराज - कुछ नहीं, मैं तो किताब डालकर पाठशाला गया था, ये रास्ते में क्या हो गया मुझे नहीं पता।

कृष्णमूर्ति - तुम नहीं जानते इसका मतलब, की ये कॉपी की जगह रद्दिया और पेन की जगह सरकंडो के टुकड़े तुम्हारे बस्ते में कैसे आ गये।
देखा पांडे जी अब तो ये झूठ भी बोलने लग गया। अरे क्या कुछ नहीं किया था तेरे लिए मैंने, तेरे जन्म के लिए कितनी प्रार्थनाये की थी, तेरी माँ ने तो ना जाने कितने संतान गोपाल स्त्रोत का पाठ किया था की उसके उसके अच्छे लक्षण वाला पुत्र हो। उस दिन जब ये पैदा हुआ तो बरसात

पूरे जोर पर थी। हमारी गाडी खराब पड़ी थी, आसपास के गाँवों से गाडी का बंदोबस्त किया। तुझे जन्म देते ही तेरी माँ बेहोस हो गई, डॉक्टरों ने भविष्यवाणी की की जच्चा या बच्चा में से एक ही बचेगा पर तू बच गया। उस दिन मारे खुशी के मेरी एक चप्पल पैर में और दूसरी का ठिकाना ही नहीं था। कुछ अशुभ देखकर पंडितों से तेरी कुंडली दिखाई उन्होंने अशुभ घड़ी का जन्म बताकर तुम्हें हमारे लिए अशुभ बताया। तुझे अशुभ समझकर त्यागने के बजाय श्रीकृष्ण भगवान का पुण्यप्रसाद समझकर मैंने तेरा नाम यदुराज रखा। बोलते - बोलते पंडित जी की आँखे कुछ नम हुई। और आप देख रहे है पांडे जी इसके कोई फर्क ही नहीं पड़ता। इसकी वजह से मेरी आत्मा रोज छलनी होती है और इसके कोई फर्क ही नहीं पड़ता। अरे तेरे से तो लाख गुना मेरा छोटा बेटा अजयराज है। तेरे को जितनी मौज मस्ती करनी थी, कर ली। तेरे को जितना घूमना था, घूम लिया। आज से तेरा घर से बाहर निकलना बंद। आज से तू पाठशाला भी नहीं जायेगा। अपने ही गाँव के 2 मास्टर जो अजय को पढ़ाने आते है आज से वो ही घर आकर तुझे भी पढ़ा कर जाया करेंगे।

यदुराज का घर से निकलना प्रायः बंद हो गया। घर पर ही 2 मास्टर आकर तीनों बहन भाइयो को शिक्षा देने लगे। यदुराज घर से बाहर ना जाने के कारण प्रायः गुमसुम सा रहने लगा, उसे गाँव के उन्मुक्त वातावरण की , भव्या की, अपने सहपाठियों की यादे जेहन में बनी रहती थी। मास्टरजी द्वारा पढ़ाये जाने के दौरान उसका ध्यान भव्या, उसके दोस्तों के इर्द गिर्द ही रहता। उसका मन बहुत होता था की भव्या से मिले, उसके साथ वैसे ही घूमें, उन पांचों दोस्तों की मित्र मंडली फिर से वही धमाचौकड़ी मचाये परन्तु अब उसके खाने से लेकर सोने तक, उठने से लेकर बैठने तक, बोलने से लेकर सोने तक उसकी हर चीज पर पहरा था। हर चीज पर पहरा होने के बाद भी वह एक काम खुले तौर पर कर

लेता था, भव्या को याद, क्योंकि यादो पर किसी का पहरा नहीं होता। मास्टरजी ने पढ़ा कर तीनों बहन भाइयो को कॉपी में काम करने के लिए दिया । यदुराज का छोटा भाई अजयराज पढ़ने में होशियार था उसने झटपट से अपना काम कर लिया। मास्टरजी ने सीमा और यदुराज की भी कॉपी चेक की, धीमें ही सही लेकिन सीमा अपने काम के लगी हुई थी। लेकिन ये क्या यदुराज को बोला गया पूर्व दिशा में जाने के लिए और वो जा रहा था पश्चिम दिशा में। वो अपना दिया हुआ काम भूल कर भव्या का चित्र बनाने की कोशिश कर रहा था । चित्र बनाने की प्रक्रिया के दौरान उसने केवल मुख का ही चित्र बनाया था, केश सृजन करना बाकी था जिस कारण चित्र किसका है इस बात की पहचान करना थोड़ा मुश्किल था। कोई गहन परिचित व्यक्ति जिसने इस चेहरे को आत्मा की गहराइयों से अनुभूत किया हो वही पहचान सकता था।
मास्टरजी का माथा ठनका,

ये क्या कर रहे हो ? मैंने तुम्हें जोड़ घटाव करने के लिए दिये है और तुम हो की लीक से हटकर चल रहे हो। सवाल निकालने के बजाय चित्र बना रहे हो। शाम को आना द्विवेदी जी को, तुम्हारी खबर देता हूँ।
यदुराज अध्यापक जी के चरण पकड़ता है, गुरुजी माफ़ी दे दो, गलती हो गई, मैं कोशिश करता हूँ गलती नहीं हो, फिर भी गलती हो ही जाती है।
मास्टरजी - ऐसे नहीं सुधरोगे तुम।

तुम लातों के भूत हो जो बातों से कभी भी नहीं मान सकते।
बस आज तो शाम को कृष्णमूर्ति जी द्विवेदी जी आ जाये तो तुम्हारा हिसाब करवा दे।
शाम को कोर्ट कचहरी के काम से लौटकर द्विवेदी जी आते है। मास्टरजी तो बस शिकायतों की पोट बांधकर उनका इंतजार कर रहे थे।

द्विवेदी जी के घर में प्रवेश करते ही नौकर बलिया उनसे डायरी और कलम रखकर ठिकाने पर रख आता है। द्विवेदी जी की निगाह मास्टरजी पर पड़ती है

मास्टरजी क्या बात है आज इतनी लेट तक गये नहीं ?
मास्टरजी - आज हमारा हिसाब कर दो, जहा हमारी कद्र नहीं हमें नहीं पढ़ाना।

द्विवेदीजी - कुछ हुआ भी होगा मास्टरजी।
मास्टरजी - होता तो क्या आपके सुपुत्र यदुराज के सामने तो हम दुखी हो गये।
द्विदेवी जी - इस बार क्या किया उस नालायक ने।

मास्टरजी - हम उसको पढ़ाते है और वो हमारे से पढ़ने के बजाय दूसरे ही कामो में लगा रहता है। मैंने उसे गणित का काम दिया था करने के लिए इसने उसे करने के बजाय बैठा बैठा ये चित्र बना रहा था। चित्र दिखाते हुए मास्टरजी ने चित्र द्विवेदीजी को पकड़ा दिया तब तक वैदेही देवी भी एक प्लेट में जलपान लिए आ चुकी थी। देख रही तो अपने कपूत की करतूत चित्र पकड़ाते हुए कृष्णमूर्ति जी बोले, पता नहीं किसका - किसका चित्र बनता है। अपूर्ण होने के बाद भी चित्र को देखते ही वैदेही समझ गई थी की ये भव्या का चित्र है क्योंकि माँ का दिल बेटे की खामोश धड़कन को भी पहचान लेता है। यदुराज आज कही फिर अपने पिता के हाथों नहीं पिट जाये ये सोचकर वो चुप रही।

एक मिनट बाद द्विवेदीजी यदुराज के दो थप्पड़ लगाते हुए की मैं तो इसको कलेक्टर बनाना चाहता हूँ की द्विवेदी परिवार की विरासत को खूब बढ़ाये परन्तु ये विरासत बढ़ाना तो दूर की बात है मेरे वारिश बनने

तक का भी हकदार नहीं, मेरा असली वारिस तो मेरा बेटा अजयराज है। निकल जा अभी मेरे घर से, ऐसी संतान होने से तो अच्छा है कि मैं समझूंगा कि मेरे एक बेटा था ही नहीं।

वैदेही - रोकर यदुराज को गले लगाते हुए ये क्या कह रहे है आप। अभी बच्चा है ये, और है तो आखिर अपना ही खून। गलतियाँ बच्चों से ही होती है, बड़ों का तो काम होता है उनको क्षमा करना।

द्विवेदी जी - मैंने इसको घर छोड़ने का हुक्म दिया है, अब तुम्हें पुत्र चाहिए या पति ये फैसला तुम्हारा है।

वैदेही - मेरे लिए तो दोनों ही महत्वपूर्ण है, एक तो मेरे प्राणनाथ है दूसरे मेरे प्राणों के आधार, एक मेरी आत्मा है तो दूसरा मेरा शरीर, ये कैसे धर्मसंकट में डाल रहे है आप।

द्विवेदीजी - वो सब मुझे नहीं पता, मैंने इसे अपने आप से बेदखल कर दिया है, अब आगे फैसला तुम्हारे हाथ में है।
कोई माँ ऐसा नहीं चाहती की उसका बेटा घर छोड़ कर जाए। कोई बाप अपने बेटे को जानबूझकर अपने से दूर नहीं भेजना चाहता। द्विवेदीजी ने ये कड़वी बाते ऊपरी मन से बोली थी उसको विश्वाश था की यदुराज एक बार गाँव में चक्कर काट कर शाम के खाने के समय तक आ जायेगा। जब पेट में भूख लगेगी और सर्द हवाओ की ठिठुरन से बचने के लिए बदन पर कपड़े नहीं होंगे तो यदुराज लौट आएगा, फिर वह वही करेगा जो उसका दिल चाहता हो।

यदुराज आज स्वतंत्र था, अब उसका जो मन करता वो वह कर सकता था, वह घर से सीधा अपने मित्रो के घर चला उनसे मिलता हुआ वह

शाम तक भागलपुर पहुंचा। भूख मिटाने के लिए उसने फल खाये तथा रात्रि विश्राम के लिए मंदिर की सीढ़ियों की शरण ली। रात्रि में ठंड अधिक होने व ठंडी हवा चलने की वजह से देर तक नींद नहीं आई। आधी रात के बाद पौ फटने तक आँख नहीं खुली। भव्या एक हाथ में लौटा, अगर, दुग्ध, पतासे महादेव का जलाभिषेक करने के लिए तथा दूसरे हाथ में कुछ फल थे जिन्हे शिवलिंग पर अर्पण करना था। मंदिर की सीढ़िया चढ़ते समय भव्या ने देखा की कोई मंदिर की सीढ़ियों पर सो रहा है। पीठ करने की वजह से चेहरा तो नहीं दिखाई दिया। कपड़ो से कुछ अंदेशा हुआ की ये यदुराज हो सकता है, भव्या ने जगाने की कोशिश की की सुबह हो गई खड़े हो जाओ, आवाज़ दी कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। सीढ़ियों के बगल में जंगले में रखी हुई छोटी घंटी लेकर कान के पास जाकर बजाई तो यदुराज आँख मलता हुआ खड़ा हुआ। यदुराज के खड़े होते ही भव्या के होश उड़ गये शरीर की सुध-बुध जाती रही। यदुराज को अपनी आँखों पर विश्वाश नहीं हो रहा था। 2-3 बार आँखे खोल कर देखा। भव्या यदुराज के मन के मनोंभावो को समझ रही थी, चुटी काटी,होश आया। भव्या तुम यदुराज बोला।

भव्या - हा मैं, महादेव का जलाभिषेक करने आई थी, पास आकर देखा तो कोई लेट रहा है।

सीढ़ियों की तरफ आपकी पीठ होने से मैं आपको पहचान नहीं पाई थी। भोर हो गई, मंदिर में लोगो की आवाजाही शुरु हो चुकी है। मुझे जगा देना चाहिए, यही सोचकर मैंने तुम्हें जगा दिया।
अब तुम बताओ तुम यहाँ कैसे ?

यदुराज एक ही सांस में शुरु से लेकर अंत तक पुरी बात बता देता है, बस भव्या अब मैं यहाँ और नहीं रहूंगा, रोज - रोज की किच – किच से तो

अच्छा है की मैं घर छोड़ दु घरवालों को मुझसे छुटकारा मिल जायेगा और मुझे खुली हवा में सांस के साथ सुकून।

भव्या - पागल, ऐसे नहीं होता है, माँ - बाप की डाट फटकार में भी प्यार और सीख छिपी हुई होती है, वो तुम्हारा भला चाहते है इसलिए डाटते है। उनकी बातों को ज्यादा दिल पर मत लगाया करो।

यदुराज - ऐसी भी क्या प्यार और नसीहत, मैं जिस काम को करना ही नहीं चाहता, जिस काम को करने में मेरा मन ही नहीं है, अनमने ढंग से करूंगा तो भी वो काम वैसा तो नहीं होगा। वो जो पढ़ाते है वो मुझे अच्छा नहीं लगता और मुझे जो अच्छा लगता है वे वो पढ़ाना नहीं चाहते।

भव्या - वो सब तो ठीक है, आदमी जिस चीज को पसंद नहीं करता भले ही वो लाख अच्छी हो उसे अच्छी नहीं लगती, पढ़ाई में तुम्हें जो पसंद नहीं है वो जबरदस्ती भी पढ़ाएंगे तो तुम्हें पल्ले नहीं पड़ेगी, लेकिन इसका मतलब ये थोड़ी है की तुम घर छोड़कर माँ को छोड़कर चले जाओगे, जानते हो माँ तुम्हारे बिना कितनी बैचेन होगी, मेरी बात मानो तो घर लौट जाओ।

यदुराज - मैं जानता हूँ मेरे घर से आने के बाद घर में कोई सुखी ना होगा सिवाय पिताजी के, लेकिन मेरा भी स्वाभिमान मुझे इस बात की इजाजत नहीं देता की मैं बेशर्मो की तरह रोज तानों के माहौल में रहूँ, भले ही मेरा घर हो या किसी और का। रही बात तुम्हारी बात मानने की तो मैं फिलहाल तुम्हारी हर बात मान सकता हूँ सिवाय इस बात के।

भव्या- थोड़ा मुँह बनाते हुए, ठीक है, लेकिन एक प्रार्थना तो स्वीकार करोगे।

यदुराज - क्या

भव्या - मैं ये फल लाई थी इन्हे खा लो, पता नहीं तुमने कुछ खाया भी होगा या नहीं।

यदुराज - ये फल तो तुम भगवान भोलेनाथ को अर्पित करने लाई थी ना, तो उन्हें ही अर्पित करो।

भव्या - मुस्कुराते हुए, भगवान को मैं फिर अर्पित कर दूंगी, तुम ये फल खा लो, भगवान तो हर किसी में होते है ना, और वैसे भी तुमने ही कहा था कुछ भी मांग लेना।

यदुराज - हाथों से फल लेते हुए, लाओ, वैसे भी कोई तुमसे जीत थोड़ी सकता है।

भव्या- हँसते हुए जीत सकते हो ना, तुम। इसके बाद दोनों एक साथ हँस पड़ते है।

यदुराज को फल खिलाने के बाद भव्या ने महादेव का जलाभिषेक किया, जाते हुए बोली यदु तुम यही रुकना मैं अभी जाकर तुम्हारे लिए खाना लाती हूँ।

भव्या के जाने के बाद यदुराज ने सोचा की मैं लाख जतन करू फिर भी भव्या मुझे बातों ही बातों में बहला फुसलाकर घर भेज ही देगी। अच्छा

तो यही होगा की मैं यहाँ से जल्दी से जल्दी चला जाऊ। यदुराज वहा से निकल जाता है एक अनजान दिशा की और, अजनबी राहो पर, जहा उसे ना तो ये पता कहा जाना है, किधर जाना है।

भव्या थोड़ी देर घर से खाना विधालय के बस्ते में लेकर पहुंची तो वहा यदुराज नहीं दिखा । हृदय विचलित हुआ, आँखो से अश्रुधारा बह निकली, मुँह से एक करुण सी चित्कार निकली। हाय यदुराज ! कहाँ गये तुम ! ना जाने किधर जाओगे, अपनी सुध बुध ले पाओगे या नहीं, कौन तुम्हें भूख होगी तो भोजन देगा। सर छुपाने के लिए किसकी छत का तुम आशियाना लोगे।

यदुराज ने कुछ दूरी पर चलकर हाथों से एक ट्रक को रुकने का इशारा किया। यदुराज ने ट्रक में बैठने से पहले कहा शहर जाना है लेकिन एक बात मैं बता देता हूँ मेरे पास तुम्हें देने के लिए किराया भाड़ा नहीं है। तुम्हारी मर्जी है तो बैठाओ, नहीं है तो मत बैठाओ। एक क्षण ड्राइवर ने विचार किया और कहा बैठो। ट्रक में बैठते ही ड्राइवर ने पूछा पूर्णिया जा रहे हो तुम । यदुराज शहर का नाम नहीं जानता था इसलिए उसने स्वीकृति में हामी भर दी क्योंकि उसे डर था की अगर वो नहीं बता पाया तो ये ड्राइवर समझ नहीं जाए की मैं घर से भाग कर जा रहा हूँ अन्यथा ये मुझे फिर से वापिस पकड़कर कही मेरे घर नहीं ले जाये । पूर्णिया में कोनसी जगह उतरोगे तुम ड्राइवर ने अगला प्रश्न किया। तुम मुझे जहा गाड़िया रूकती है वहा उतार देना यदुराज ने उतर दिया।

अच्छा बस स्टैंड उतरोगे तुम ड्राइवर ने अपनी बात को दोहराते हुए कहा। यदुराज एक बार ड्राइवर की तरफ देख रहा और दूसरी बार खिड़की की तरफ। वह पसीने- पसीने हो गया। ड्राइवर ने उसके मन की स्थिति को भापकर अंदायजा लगा लिया की घर वालों की स्वीकृति से तो ये बच्चा

नहीं जा रहा । बेटा तुम घबराओ मत, सही जगह उतारूंगा तुम्हें ट्रक ड्राइवर ने कहा । मेरा नाम सुखविंदर है, मैं पूर्णिया के पास अगरतलाई का रहने वाला हूँ । तुम्हारे जितनी उम्र का मेरे भी एक बेटा है मनप्रीत । मेरी हर बात मानता है मैं ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं हूँ, वो पांचवी जमात में पढ़ता है । मुझसे कहता है की गुरुजी विधालय में बताते है की पिता का दर्जा स्वर्ग से भी बढ़कर होता है । अब यदुराज को कुछ तसल्ली मिली की वह किसी महफूज जगह किसी विश्वाश के आदमी के साथ है । एक ढाबे पर आकर सुखविंदर ने ट्रक रोक दिया । पहले कुछ खाना खा लेते है बेटा, भूख और थकान को यदुराज के चेहरे पर पढ़कर सुखविंदर ने खाना खाने के लिए गाडी रोकी थी ।

यदुराज - मुझे भूख नहीं है,
सुखविंदर - पेट पर हाथ फेरते हुए, सब इसके लिए ही होता है ना ये पापी पेट होता ना हम और तुम इस समय साथ होते, थोड़ा ही सही लेकिन खा लो ।

ठीक है कहते हुए यदुराज ने भरपेट भोजन कर लिया । इसके बाद ट्रक में रवाना होकर दोनों पूर्णिया पहुंच गये । शरदानंद छात्रावास के सामने सुखविंदर ने गाडी रोक दी, उतर जा बेटा, यही आएंगे तुम्हें लेने जिनके तुम जा रहे हो । यह छात्रावास उनके मित्र मधुसूदन पंडित का था । मधुसूदन पंडित से सुखविंदर ने कानों कान कुछ कहा । ठीक है मैं चलता हूँ ध्यान रखना यह कहकर वे ट्रक लेकर चले गये । मधुसूदन पंडित जो दयालु प्रवृत्ति के साथ धार्मिक व्यक्ति थे वे यदुराज के पास आये और सर पर हाथ फेरते हुए बोला की बेटा जब तक तुम्हारे मिलने वाले लेने आये तब तुम चाहो तो इस छात्रावास में विश्राम कर सकते हो, घबराने की तुम्हें बिल्कुल आवश्यकता नहीं है । जब तक दूसरा आशियाना नहीं

मिले तब तक इसी में रह लेते है यह सोचकर यदुराज ने हामी भरी और अंदर चला गया।

उधर दूसरी तरफ यदुराज की परदादी पंडिताइन जमना देवी को जब ये पता चला की उसके जिगर के टुकड़े को घर से बाहर निकाल दिया तो उसका खाना पीना छुट गया इसी के चलते वो बीमार हो गई। यदुराज के घर से निकाले जाने का अफ़सोस हर कोई कर सकता था, सबके सैकड़ो बार मिन्नत करने के बाद भी द्विवेदी जी ने यही कहा जब ठोकरे खायेगा तो अपने आप आ जायेगा, मैं तो उसे लाने नहीं जा रहा, द्विवेदीजी जिद्द के बड़े पक्के थे, एक बार उनके मन में जचने के बाद उनको मनाना थोड़ा मुश्किल भरा था। शाम को द्विवेदीजी घर लौटे, पता चला उनकी दादी माँ बहुत बीमार है । डॉक्टर मनमोहन देसाई को बुलाया गया। सारे शरीर की जांच करने के बाद डॉक्टर साहब ने बताया की ये खा पी नहीं रहे और कोई बात इन्हे अंदर ही अंदर खाए जा रही है जिस कारण ये बीमार है, अगर कुछ दिन इनकी सेवा करना चाहते हो तो इन्हे शीघ्रता से खाना खिलाकर दवाई देकर ठीक करो। क्योंकि जब तक ये खाना नहीं खाएंगे जब तक ऐसी कोई दवा नहीं है जो इन्हे ठीक कर सके। द्विवेदी जी ने अपनी पत्नी वैदेही को इशारा किया की वो अभी तुरंत भोजन बनाकर लाए। कुछ देर के बाद भोजन बनकर तैयार हो गया। द्विवेदी जी खुद थाली हाथो में लेकर अपनी दादी को खिलाने लगे। जैसे ही पहला निवाला मुँह के समीप पहुंचा जमना देवी ने उनका हाथ पकड़ कर रोक दिया।

द्विवेदी - ये क्या कर रहे हो माँ ? खाना नहीं खाओगे तो आप ठीक कैसे होगे ?
जमना - मर ही तो जाउंगी, मर जाने दो, वैसे भी तुझे किसकी फ़िक्र है।

द्विवेदी - फ़िक्र क्यों नहीं है माँ। कभी ऐसा होता है क्या की बेटे को माँ की फ़िक्र नहीं हो।

जमना - नहीं है, अरे तू मेरे जिगर के टुकड़े को मुझसे अलग करके चाहता है की मैं और ज्यादा उम्र पाउ। क्या ये सम्भव है ?
द्विवेदी - इसमें गलती आपके लाडले की है, वो इतना बिगड़ गया है की पढ़ने की सुध बुध नहीं रही। पूरे दिन चित्रकारी में लगा रहता है, मैं उसे पढ़ा लिखाकर कलेक्टर बनाना चाहता हूँ और वो आलतू - फालतू के कामो में में ही लगा रहता है।

जमना - अरे पढ़ ही तो कम रहा है, उसे अच्छा नहीं लगता इसलिए नहीं पढ़ता, कोई चोरी चकारी करता है, उसके कोई ऐसे वैसे उलाहने घर आते है। मैं एक बात तुझे बता देना चाहती हूँ जब तक यदुराज खुद अपने हाथों से आकर मुझे खाना नहीं खिला देता तब तक मैं ना कुछ खाउंगी और ना तुम्हारी ये दवाइयाँ लूंगी ....।

अगले दिन कृष्णमूर्ति द्विवेदी जी ने अखबार में यदुराज की गुमशुदगी का इश्तहार दिलवा दिया, 3 दिनों तक ना कोई खोज खबर आई और ना ही कोई इश्तहार पढ़ने वाले किसी पाठक ने इस संदर्भ में सूचना दी। चौथे दिन शाम को फोन की घंटी बजी ट्रिंग ट्रिंग ...।
द्विवेदी जी ने आनन फानन में फोन उठाया,

हैलो कृष्णमूर्ति द्विवेदी जी बोल रहे है क्या दूसरी तरफ से आवाज़ आई।
हाँ, जी मैं ही बोल रहा हूँ, द्विवेदी जी ने उतर दिया।
अख़बार में इश्तहार देखा था आपका ये बच्चा हमारे पास सुरक्षित है, आप इसे कल आकर ले जा सकते है।

द्विवेदीजी - ठीक है मैं कल आकर इसे ले जाता हूँ, आप पता बताइये।
जी मैं शरदानंद छात्रावास से बोल रहा हूँ, मेरा नाम मधुसूदन पंडित है, बस स्टैंड से अगली गली सदर थाना रोड पर आ जाना।
ठीक है मैं कल आता हूँ द्विवेदीजी ने फोन रखते हुए कहा।

दूसरे दिन द्विवेदीजी अपनी मोटरकार में बैठकर छात्रावास पहुंचते है। मदुसूदन पंडित से मिलना है द्विवेदीजी ने गेटकीपर को कहा। जी अभी वो थोड़ी देर में पूजा समाप्त करके आते है, आप तब तक यहाँ वेटिंग रूम में इंतजार कीजिये।
थोड़ी देर बाद मधुसूदन पंडित पूजा समाप्त करके आये, वेटिंग रूम में कोई है, उससे मिलना चाहिए ये सोचकर वो अंदर जाने के बजाय सीधा वेटिंग रूम में आ गया।
नमस्कार पंडित जी मैं कृष्णमूर्ति द्विवेदी कल अपनी फोन पर बात हुई थी।
हाँ मजिस्ट्रेट साहब, पहचान गया, अभी तक तो आपका नाम ही सुना था आज साक्षात् दर्शन भी हो गये।

द्विवेदी जी - मधुसूदन जी मेरे बेटे को बुला लीजिये, मैं उसको शीघ्रता से ले जाना चाहता हूँ।
मधुसूदन - इतनी भी क्या जल्दी है द्विवेदी जी थोड़ा ठहरिये, मुझे भी आपसे वार्ता करनी है, वैसे तो आपके बेटे ने मुझे सब बता दिया है, फिर भी मैं आपका पक्ष जानना चाहता हूँ। आखिरकार यदुराज घर से भागा तो क्यों भागा ?

द्विवेदी - वो उसका पढ़ाई लिखाई में जरा सा भी ध्यान नहीं है और ये पिछले कई सालो से चला आ रहा है। मैंने उसकी पिटाई कर दी और कहा की घर से निकल जाओ, ऐसा मैंने उपरी मन से कहा था ' मैंने सोचा

शायद वो शाम तक लौट आएगा' । ऐसा मेरा कहने का मकसद सिर्फ यही था की यदुराज सुधर जाए।

मधुसूदन - लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं है की यदुराज बिल्कुल भी नहीं पढ़ता, उसकी एक पेंटिंग देखी थी मैंने कितनी अच्छी चित्रकारी है उसकी, और आप कहते हो की कुछ आता जाता नहीं।

द्विवेदी जी - मधुसूदन जी चित्रकारी से पेट नहीं भरता, मैं तो उसे कलेक्टर बनाना चाहता हूँ और वो फालतू के कामो में उलझा रहता है, मास्टरजी ने उसे जो काम आज तक दिया है वो काम उसने कभी किया ही नहीं।

मधुसूदन - द्विवेदी जी मैं आपकी बातों पर चलो कुछ देर के लिए सहमति जता देता हूँ, लेकिन क्या आप जानते हो आप ऐसा करके बच्चे को विद्रोही बना रहे हो। आज वो आपकी बात इसलिए नहीं मानता क्योंकि आपने उसकी कभी सुनी ही नहीं, सिर्फ अपनी ही चलाते रहे । कोई आपकी बात सुने इस लिए जरूरी है की आप भी उसकी सुनों, कोई आपकी बात माने इसके लिए जरूरी है की आप भी उसकी कुछ बात मानों। रिश्तों में हम जो देते है वही हम तक लौट कर आता है भले ही वह प्यार हो या नफ़रत। मेरी तो यही सलाह है आपको की उसे अपनी बात अगर मनवानी हो तो पहले खुद भी उसकी कुछ इच्छाएं, उसकी बाते सुनों क्योंकि एकदम से किसी को नियंत्रण में नहीं लिया जा सकता। और आप तो खुद ही इतने विद्वान हो मैं आपको क्या समझाऊँ।

चलो अब हमारे छात्रावास में चलकर अपने बेटे से मिल लो। छात्रावास के अंदर जाने पर वहा विभिन्न समूहों में बच्चे अलग अलग गतिविधिया करते मिले, वातावरण में शांति थी। द्विवेदी जी को यहाँ का माहौल बहुत

पसंद आया। मधुसूदन पंडित से प्रश्न किया की यहाँ कितने बच्चे रहते है, और आपकी वर्षभर की कितनी कमाई हो जाती है। बच्चे तो हजारों की संख्या में है, और रही बात कमाई की तो वो मैंने कमाई के लिए नहीं खोल रखा कुछ चीजे सुकून देती है बस इसलिए वरना पुरखों की हजारों बीघा जमीन है, यहाँ इन बच्चों में रहकर थोड़ी शांति सी मिलती है। फर्स के पास एक खम्बे के सहारे यदुराज बैठा था, द्विवेदीजी किसी तरह उसे रिझा बुझाकर घर ले गये

घर आते ही सब उसका इंतजार कर रहे थे। जमना देवी को तो मानों उसमें ममता ही अटकी हुई हो। यदुराज ने उन्हें खाना खिलाया, और अपने हाथों से दवाई दी। एक दो दिन के उपचार के बाद वो शीघ्र स्वस्थ्य हो गई। यदुराज का क्षण-क्षण वहा सदियो के बराबर था। उसका मन करता था की किसी भी तरह से हो बस भव्या उसे जल्दी से आकर मिल ले, उससे ढेर सारी बाते करनी है। उसे अपना हाल सुनाना है की इतने दिन उसने कैसे काटे है। अब उसने सोच लिया गाँव की पाठशाला में भले ही बद्रीप्रसाद उपाध्याय जी छड़ी की मार लगाए या कोई और अध्यापक वह वही पढ़ेगा। मार ही तो खायेगा कम से कम भव्या और अपने संगी साथियो के साथ कुछ वक्त तो गुजारा करेगा। डरते डरते वह अपने पिता के पास पहुंचा। पिताजी मैं अपने गाँव की पाठशाला में ही पढना चाहता हूँ, आज से आपको मेरी कोई शिकायत नहीं मिलेगी। मास्टरजी वहा जो पढ़ाएंगे मैं वो सब याद करके रखूंगा, बस मुझे अपने गाँव की पाठशाला में पढ़ने दो। यदुराज ने डरते डरते सारी बात कह दी।

पिछले तीन साल से तुम गाँव की पाठशाला में ही पढ़ रहे हो, और एक नहीं तुम्हारी हजार शिकायत आ चुकी है, और तुम ये बात हर बार कहते हो की आज के बाद कोई शिकायत नहीं आएगी फिर भी तुम्हारी शिकायत आ ही जाती है, गाँव के इन आवारा बच्चों के साथ रहकर तू

भी आवारा हो गया है, मैंने तुम्हें छात्रावास भेजने का फैसला कर लिया है। द्विवेदीजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

भव्या से मिलने और अपने साथियो के साथ पढ़ने की कोई दाल गलती न देख यदुराज ने अपनी माँ से पिताजी को कहलवाया लेकिन सारे प्रयास व्यर्थ रहे।

होनी को कुछ और ही मंजूर था। कुछ दिनों बाद यदुराज की परदादी जमना देवी का देहांत हो गया। पुरा परिवार शौक और गम के मातम में डुबा हुआ था, यदुराज तो पिछले 2 दिन से अपनी सुध बुध भुला बैठा था, मैं कहा हूँ अपने इस सत्य का ज्ञान भी आज उसे तीसरे दिन हुआ। एक तो परदादी का देहांत जो उसे अपनी जान से ज्यादा प्यार करती थी, दूसरा छात्रावास जाने के बाद वो भव्या से कब मिलेगा इसका उसे भान नहीं। कुछ भी हो भगवान एक बार छात्रावास जाने से पहले भव्या को देख लूँ ऐसा कोई इंतजाम हो जाए, ऐसी वो तरकीब सोचने लगा, अचानक से एक विचार उसके मन में आया। इस समय सारा परिवार दिनभर व्यस्त रहता है, क्यों ना गुप्त रास्ते से कालिका मंदिर होते हुए भागलपुर जाउ। जब सुबह भव्या महादेव मंदिर में पूजा करने आएगी तो उसको मिलने का ठिकाना बता दूंगा। और हम मिल सकेंगे। रात में सब खाना खाकर सो गये, दिनभर के थके हुए थे तो सबको जल्दी ही नींद आ गई। यदुराज हवेली के चौथे दरवाज़े के पास पहुंचकर कीलनुमा घड़ी को हटाता है, नवरात्रि के अवसर पर जब द्विवेदी परिवार कालिका मंदिर में पूजा करता था तब इसी रास्ते से जाता था। इस कारण से यदुराज को उस गुप्त रास्ते का सम्पूर्ण ज्ञान हो गया था। दरवाजा बिना आवाज़ किये खुल जाता है। यदुराज प्रवेश करके उस दरवाज़े को बंद कर देता है। गुप्त रास्ते में अपेक्षाकृत अंधेरा अधिक था इसका भान यदुराज को पहले से ही था इसलिए उसने 2 कोस के रास्ते के लिए जरूरत के हिसाब से एक मसाल

ले ली। घंटेभर में वह कालिका मंदिर पहुंच गया।। कालिका मंदिर में पूजा अर्चना के बाद वह सीधा भागलपुर के शिव मंदिर के लिए निकल गया। भोर होने से पहले वह शिव मंदिर में पहुंच चुका था। अब किसी तरह से सुबह हो और भव्या मंदिर में आये। एक कदमो के आने के आहट हुई, भव्या आई होगी, क्या वह मेरी पीठ से पहचान लेगी यही सोचकर यदुराज ने सीढ़ियों की तरफ पीठ करके शिवलिंग के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। जैसे - जैसे कदमो की आहट पास आती, यदुराज की बैचेनी बढ़ती जाती। एकदम से ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने पीछे से छुआ हो, शरीर थोड़ा खींचा, यदुराज ने एक गहरी सांस लेकर पीछे देखा वो मंदिर का पुजारी था। आना था किसे आ गया कौन, खैर अब पुजारी जी आ ही गये तो आरती में शामिल हो लेंगे। आरती शुरु हुई, मंदिर में बजने वाले शंख के दिव्य स्वर की जगह भव्या का मधुर स्वर आज उसके कानों में गुंज रहा था, झालर की आवाज का स्थान पायल की मधुर झंकार ने ले लिया था। यदुराज प्रार्थना में इतना मशगूल हुआ की कब आरती समाप्त हुई कब पुजारी अपने घर गया उसे पता ही नहीं चला। फिर किसी के छुअन का एक मधुर एहसास हुआ, हल्के से पीठ घुमाई सामने भव्या खड़ी थी। लगा आज बरसो मुराद पुरी हुई है। कहा थे यदुराज तुम ? कैसे हो तुम ? कोई खोज खबर तक नहीं तुम्हारी, जानते हो मैं कितना बैचेन थी तुम्हारे बिना ? खैर तुम्हें क्या ? तुम्हें तो अपने स्वाभिमान की पड़ी है ना ! कोई मरे तो मर जाए, घरवालों से नाराजगी थी इसमें मुझे क्यों घसीटा, क्या कसूर था मेरा। भव्या ने एक ही सांस में बीसो प्रश्न कर दिये। भव्या इन सबका तुम्हें जवाब दूंगा, पहले तुम मेरी बात सुनों। अब तुम घर जाओ जल्दी से तैयार होकर विधालय के लिए जाओ तो नीरू के पुराने घर की तरफ आ जाना, मैं तुम्हें वही मिलूंगा, अगर आज तुम नहीं मिल पाई तो दुबारा मुलाक़ात कब होगी वो ईश्वर जाने। ऐसा मत कहो यदु भव्या ने मुँह पर ऊँगली रखते हुए कहा। मैं तुम्हें

ऐसी जगह कही नहीं जाने दूंगी जहाँ तुम मुझसे दूर रहकर लौट कर ना आ सको। मैं अभी थोड़ी देर में आती हूँ।

कुछ देरी के इंतजार के बाद नीरू और भव्या नीरू के पुराने घर की तरफ आ जाती है। यह मकान गाँव के पुराने मोहल्ले में था। अधिकतर लोग पुराने मकानों को छोड़कर नई जगह रहने लगे थे इस कारण यहाँ अपेक्षाकृत लोगो की आवाज़ाही व दखलंदाजी कम थी । विधालय बस्ता तैयार करके भव्या पहुंची । यदुराज जिससे इंतजार की घड़िया काटी नहीं जा रही थी। बातचीत का दौर शुरु हुआ, तो तुम जा रहे हो यदु ..... भव्या ने प्रश्न किया। हाँ भव्या; जा रहा हूँ, नहीं जाऊ इसका कोई विकल्प भी नहीं है, जाना जरूरी है जाना तो पड़ेगा। क्या मेरे लिए भी नहीं रुक सकते यदु .....
मैं तो जाना हीं नहीं चाहता, पर भेज रहे है जबरदस्ती और मैं कुछ नहीं कर सकता।
वापिस कब आओगे ....।
वापिस आने का तो पता नहीं परन्तु तुम हरपल मेरे अहसासो में रहोगी भव्या..... ।
कहते- कहते आँखो से नीर बहने लगे,
यदु ..... भव्या एक हाथ से आँसू पोछते हुए, गोद में लेट जाओ।
गोद में लेटकर भव्या ये मेरी जिंदगी का सबसे सुखद पल है।
पुरुष सामान्य रूप से दो प्रकार की स्त्रियों की गोद में सुकून का अनुभव करता है, एक तो माँ और दूसरी प्रेमिका। बातों ही बातों में यदुराज भव्या की चुड़ामणि उसके बालो से कब निकाल लेता है उसे पता ही नहीं लगता। जाते समय भव्या बालो को टटोलकर यदु मेरी चुड़ामणि नहीं मिल रही । हँसते हुए इतनी सी बात भव्या वहा से आऊँगा तो तुम्हें चुड़ामणि पहना दूंगा। अश्रुओ की बहती धाराओं के साथ दोनों विदीर्ण हृदय से एक दूसरे से विदा लेते है।

अध्याय - २

आज से यदुराज के जीवन की एक नई शुरुआत थी। नया माहौल, नई जगह, नया स्कूल, नए लोग, नया परिवेश प्रत्येक चीज उसके लिए नई थी। पुरानी चीजे भला कभी किसी से छूटती है क्या ? स्थान बदलने से हलचल जरूर होगी किन्तु यादे तो शाश्वत है जैसे किसी रस्सी की रगड़ से निशानों का बन जाना शाश्वत है उसी तरह कोई किसी स्थान को छोड़ देने पर रस्सी के निशान की तरह स्थान की स्मृतिया मस्तिष्क के किसी कोने में कौंध जाती है। आज यदुराज के छात्रावास का पहला दिन था। दोपहर तक पहुंचने के बाद एक कमरे में सामान को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया के दौरान ही शाम का समय हो गया। गुरुकुल पद्धति के अनुसार आश्रम में छोटे छोटे झोपडीनुमा कमरे बनाये गये थे। एक कमरे में 4 अन्तेवासी रह सके, इतनी पर्याप्त जगह थी। पक्की दीवारों के स्थान पर जालिनुमा दीवार लगाई गई थी ताकि प्रत्येक अन्तेवासी की गतिविधियों को रास्ते से राह चलते भी देखा जा सके। संध्या का समय हो गया चला था, यदुराज दीवार के पास बैठा चिंतन मनन कर रहा था। प्रार्थना सभा में संध्या करने नहीं चलना क्या ? स्वर गुंजा, ध्यान दूसरी जगह होने के कारण यदुराज उसे सुन नहीं पाया। कंधे पर हाथ रखकर थोड़ा हिलाकर, अजी, मैंने कहा प्रार्थना सभा में संध्या करने नहीं चलना क्या ? तुम जाओ मेरा मन नहीं है यदुराज ने कहा।

मन नहीं है, ऐसे कैसे मन नहीं है, आज तुम्हारा पहला दिन है इसलिए शायद तुम्हें पता नहीं है, शाम के 6 बजते ही प्रत्येक अन्तेवासी को प्रार्थना सभा में पहुंचना अनिवार्य होता है। 6 बजते ही दिनिया घूम फिर कर देखता है कहीं कोई रह तो नहीं रहा, सब के सब प्रार्थना में पहुंच गये क्या, आज शायद नहीं आया क्योंकि आज यहाँ कई विधार्थी नए है, इन्हें

यहाँ के माहौल में घुलने में समय लगेगा इसलिये शायद दिनिया को नहीं भेजा।
यदुराज - ये दिनया कौन है, और अगर कोई नहीं जाये तो ये क्या कर लेगा ?
अरे तुम नहीं जानते दोस्त ये दिनिया बहुत सिरफिरा इंसान है, किसी को भी अगर अगर यह देख ले की की ये 6 बजे के बाद भी नहीं गया तो यह उसकी पिटाई कर देता है।

यदुराज - उसकी कोई गुरुजी से शिकायत नहीं करता क्या, या गुरुजी को इन सबका पता नहीं है ?

अरे दोस्त तुम नए-नए हो इसलिए शायद तुम्हें समझने में वक्त लगेगा, गुरुजी को उसके बारे में पता नहीं है पहली बात तो ये, दूसरा उसकी अगर कोई शिकायत करता है तो वो उसे बाद में बहुत मारता है।

अच्छा तुम्हारा नाम क्या है ? बात खत्म होने के बाद यदुराज ने पूछा।

ही ही ही .... तुम भी ना पानी पीकर जात पूछ रहे हो।
मुझे तुम्हारा नाम पता है तो तुम्हें मेरा नाम क्यों नहीं पता यदुराज ?
अच्छा अब बता देता हूँ भूलना मत, मेरा नाम भानु है।
भूलूंगा क्यों भानु, तुम्हारा नाम ही ऐसा है, भला तुमको भूल जाऊँगा तो तुम्हारे नाम की चमक मुझे भूलने देगी।
इसके बाद दोनों प्रार्थना सभा में जाते है।

प्रार्थना सभा में संध्या करने का तरीका यदुराज को आज थोड़ा अजीब लगा, पवित्रीकरण से आचमन तक, करन्यास से शिखाबंधन तक आज सब उसके उपर से जा रहा था। उसे इतना तो समझ आ रहा था की कुछ

बोल रहे है परन्तु क्या बोल रहे है ये उसे समझ नहीं आ रहा था। रात को खाने के समय सबको मैंश में बुलाकर दरी पट्टी बिछाकर सामने एक चौकी रख दी गई, भानु ठीक यदुराज के बाई तरफ बैठा था, सबका भोजन समाप्त होने को था ये क्या यदुराज ने तो एक निवाला तक नहीं खाया था तुम खाना क्यों नहीं खा रहे भानु ने पूछा,

बस ऐसे ही मन नहीं है, पता नहीं घर पर सबने खाया होगा या नहीं,
घर पर सबने खा लिया होगा यदुराज तुम ज्यादा चिंता मत करो, वो अपना ख्याल रखेंगे और आज से तुम अपना ख्याल रखो।

ये कोई एक दिन की बात नहीं है की नहीं खाया तो चलेगा,यहाँ कई साल गुजारने है। यू कब तक भूखे रहोगे।
चलो मुँह खोलो,

आ- आ .. यदुराज के मुँह खोलते ही भानु एक बड़ा सा निवाला उस के मुँह में दे देता है। भोजन समाप्त होने के बाद सब अपने अपने निर्धारित कमरों में पहुंचते है। तुम कुछ भी कहो भानु यहाँ मेरा मन जरा सा भी नहीं लग रहा, हालांकि तुम अपना अपनापन मुझे दिखा रहे हो, मेरा ख्याल भी रख रहे हो। पर उसकी यादे मेरा पीछा ही नहीं छोड़ रही।
उसकी किसकी ..... सब अन्तवासियों का स्वर एक साथ प्रतिक्रिया में गुंजा।
यदुराज - अब जाने भी दो, किसी अन्य अवसर पर बताऊँगा।

समय बीता, पहले जो दिन अपेक्षाकृत बहुत बड़े लगते थे वो अब धीरे-धीरे थोड़े छोटे लगने लग गये। तकरीबन 3 महीने बीतने पर एक दिन यदुराज की हिंदी की कॉपी किसी ने निकाल ली, जिस पर उसका नाम नहीं लिखा हुआ था। लेकिन अब तक दिया गया सारा होमवर्क पुरा

कर रखा था। आज हिंदी के अध्यापक मनोंहर जी काम चेक करने वाले थे। किसी विधार्थी का काम पुरा नहीं किया हुआ था, यदुराज का काम पुरा था इसी बात का उसने फायदा उठा लिया और जब कॉपी चेक करने की बारी आई तो यदुराज जाकर खड़ा हो गया। मार खाने के लिए हाथ आगे बढ़ा दिया, लेकिन आज उसकी पहली गलती है ये सोचकर मनोंहर जी ने मार लगाने के बजाय बैठा दिया।

भानु - तुमने होमवर्क कर तो रखा था, फिर तुमने कॉपी क्यों नहीं दिखाई ?
यदुराज - मेरी कॉपी मुझे मिली नहीं।
भानु - शायद किसी ने निकाल ली होगी।
फिर ये बात तुमने अध्यापक जी को क्यों नहीं बताई ?
यदुराज - ना तो मैं ये कह रहा की मैं भूल गया, और ना ही मैं ये कह रहा की किसी ने निकाल ली होगी।

भानु - मुझे पता है, किसी ने निकाल ली है, और अब तुम देखना मैं भी पुरा ध्यान रखूंगा की कौन तुम्हारी उस कॉपी को लेकर चेक करवाने आता है। आते ही उसे तुरंत पकडूँगा। थोड़ी देर बाद दीपक यदुराज की चुराई हुई कॉपी चेक करवाने आता है। कॉपी चेक होने के बाद दीपक अपने साथियो की तरफ एक कुटिल मुस्कुराहट से देखता है। जिसकी आँखे कह रही थी की इस समय मुझसे शातिर कोई नहीं, मैं जिसको चाहू उसको बेवकूफ बना सकता हूँ। किन्तु आज भानु ने उसकी आँखो में झांककर आँखों से सुरमा ही चुरा लिया था। मास्टरजी दीपक ने जो कॉपी चेक करवाई है वो उसकी खुद की कॉपी नहीं है। वो कॉपी उसने यदुराज की चुराई थी। क्या चोरी और कॉपी की, अगर ये साबित हो गया तो आज इसकी जो पिटाई होगी उसे सब याद रखेंगे। यदुराज बेटा तुम

खड़े हो जाओ, और इधर आओ। यदुराज के पास आते ही गुरुजी ने कॉपी दिखाकर क्या ये कॉपी तुम्हारी है।

यदुराज अपनी कॉपी को पहचान गया था, किन्तु आज खामख्वाह दीपक की पिटाई होगी इसलिए उसने मना कर दिया की नहीं गुरुजी ये मेरी कॉपी नहीं है। अब गुरुजी का गुस्सा भानु पर होता है, ऐसे ही तूने किसी पर जूठसे इल्जाम कैसे लगा दिया।

मैंने किसी पर जूठा इल्जाम नहीं लगाया गुरुजी, मैं इसकी कॉपी के कलर को देख कर पहचान सकता हूँ। कलर तो एक जैसे भी हो सकते है किन्तु एक जैसे कलर होने से कॉपी भी एक ही हो ये कैसे सम्भव। अब तो तुम्हें छोड़ देता हूँ लेकिन मेरी एक बात ध्यान रखना दुबारा ऐसे ही किसी पर जूठा इल्जाम मत लगाना।

छुटी होने के बाद सब बच्चे क्लासरूम से बाहर आते है, वहा एक अप्रत्याशित घटना घटती है। दीपक और उसकी मित्र मंडली भानु के पास आकर उसे तरह -तरह की धमकिया देते है। उसी समय यदुराज पीछे से उनके पास आ जाता है वह वहा खड़ा खड़ा चुपचाप तमाशा देख रहा होता है किन्तु उनकी धमकियों का उसने कोई प्रत्युतर नहीं दिया।

उनके जाने के बाद भानु चुपचाप जाने लगता है। भानु ! पीछे से यदुराज बोलता है, लेकिन भानु आज उसकी बात अनसुनी कर देता है। अरे यार मेरी बात तो सुन, भानु की तरफ से कोई प्रतिक्रिया ना पाकर यदुराज भाप लेता है की इस समय वो अवश्य ही गुस्से में है। खैर कोई बात नहीं, थोड़े समय बाद इसका भी गुस्सा शांत हो जायेगा।

रात को खाने का समय हुआ। सभी बच्चे मैंश में अपने अपने संगी साथियो के साथ बैठे है लेकिन यदुराज और भानु पास - पास बैठते हुए भी एक दूसरे से दूर बैठे है।

सबका भोजन समाप्त होने को था लेकिन यदुराज ने एक निवाला तक नहीं तोड़ा, भानु ने चुपचाप बिना बोले एक निवाला उसके मुँह में रख दिया।

यदुराज - मैं ऐसे तो बिना किसी अधिकार भावना से तुम्हारे हाथ से भोजन नहीं करूंगा

भानु ने उसकी बातों को लगभग अनसुना कर दिया।

यदुराज - मैं कुछ कह रहा हूँ और तुम बहरे बने बैठे हो, मैं कह रहा हूँ बिना किसी अधिकार भावना से मैं तुम्हारे हाथ से भोजन नहीं कर सकता भाई।

भानु - हर जगह अधिकार भावना नहीं होती, कुछ जगह मानवीयता भी होती है, जो तुम उन पर भी दिखाते हो जो उसके लायक नहीं होते।
यदुराज - ऐसा क्या कर दिया मैंने ?

भानु - जब तुम्हारी कॉपी उस दीपक और उसके साथियो ने चुराई तो तुम्हें गुरुजी को बताना चाहिए था की होम वर्क तो मैंने कर रखा है किन्तु मेरी कॉपी किसी ने चुरा ली। जब मैंने दीपक के पास तुम्हारी कॉपी को पहचान लिया और मैंने गुरुजी से उसकी शिकायत की तो तुम्हें सच का साथ देकर कॉपी तुम्हारी है ये कबूल करना चाहिए था। मुझे तो बिना मतलब के ही डांट पड़ी, मेरे सच बोलने का मुझे ये इनाम मिला।

यदुराज- यार कॉपी को तो मैं पहचान गया था, किन्तु मैं गुरुजी को शिकायत कर देता तो वो पीटते, और मेरे बारे में ना जाने क्या - क्या उलटी सीधी बाते सोचते।

भानु - ओह! तो जनाब ने बहुत महान काम किया है, मुझे लगता है तुम्हारी आरती उतारी जाये। तुम्हारी समस्या ये है की दूसरा तुम्हारे बारे में कुछ भी गलत ना सोचे। अब तुम क्या सोच रहे हो की वो तुम्हारे बारे में गलत नहीं सोचेंगे, तुम्हें महान बताएंगे, जिसको तुम्हारे बारे में जो सोचना है वो सोचेगा ही, भले ही उसके साथ लाख अच्छाई ही क्यों ना कर दो। और सच जानकर गुनाह पर पर्दा डालने वाला भी उतना ही गुनहगार होता है जितना गुनाह करने वाला।

यदुराज - ठीक है भाई, अब दादाजी मत बन, ही ही ही .....।

भानु - जब तक तुम पलट कर जवाब देना ना सीखोगे तब तक तो मैं दादाजी ही बनता रहूंगा, ही ही ही ..... दोनों एक साथ हँस देते है।

धीरे - धीरे अन्तवासियो को और सुदृढ़ बनाने के लिए उनसे कार्य ज्यादा करवाया जाने लगा। सुबह 4 बजे पहली सीटी के साथ उठना, अपनी दैनिक क्रियाओ से निवृत होकर ग्राउंड में पहुंचना, उसके बाद तकरीबन 1 कोस दौड़ना, दौड़ते - दौड़ते शरीर पसीने से तर हो जाया करता था। उसके बाद विभिन्न प्रकार के योग और व्यायाम, सूर्य नमस्कार आदि। इसी क्रम में सुबह के 7 बज जाया करते थे।
अगला चरण प्रार्थना सभा में प्रभात संध्या के साथ मधुसूदन पंडित जी का ज्ञान और धर्म से भरा हुआ एक घंटे का व्याख्यान, जो कदाचित कुछेक विधार्थियों को उबाऊ लगता था। शुरुआत में तो कक्षा के कुछ

कामचोर छात्र इधर उधर होकर, बालकनियों में छिपकर जैसे तैसे वक्त को गुजार लेते थे और प्रार्थना समाप्त होने पर आते छात्रों के साथ मिलकर नास्ता करने के लिए मैंश में चले जाया करते थे ताकि उनकी चोरी नहीं पकड़ी जाये। बदलते वक्त के साथ नियंत्रण और भी कठोर होता जा रहा था। ग्राउंड से लेकर प्रार्थना सभा तक बच्चों के अलग अलग दल बनाकर एक दलनायक नियुक्त कर दिया, जिसकी जिम्मेदारी तय की गई की वह अपने ग्रुप की सदस्य संख्या को संतुलित रखे, अगर एक भी अन्तेवासी कम मिलता है तो इसकी सूचना दलनायक को दे।

दूसरे दिन प्रातः 4 बजे की सीटी के साथ उठकर उन्हें भी प्रत्येक बच्चे की तरह तैयार होकर ग्राउंड में पहुंचना पड़ा। जब दौड़ने का समय हुआ तो आज जो बच्चे पहली बार दौड़ रहे थे उनमें से कुछ तो सब बच्चों के बराबर दौड़ नहीं सके, कुछ पिछड़ गये और कुछ गश खाकर गिर गये। प्रार्थना सभा में सबसे प्रातः संध्या करवाने के बाद मधुसूदन पंडित जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा की जो बच्चे ये सोच रहे है की वो दौड़ेंगे नहीं तो उनका किस को पता चलेगा, कोई इधर - उधर छिप कर बच जाता है और वो ये सोचते है की उनका किसी को नहीं पता तो हमें सबका पता रहता है। हम जानबूझकर अनजान इसलिए बने हुए थे ताकि आप खुद ही सुधर जाओ ... नहीं तो हमें तो सुधारना ही है। जिंदगी भी तो एक दौड़ ही है, कोई सपने के पीछे दौड़ता है तो कोई अपना छुट गया उसको बचाने के लिए। ये दौड़ और व्यायाम सुबह इसलिए नहीं होती की हम सब चाहते है की आप सब फ़ौज या रक्षक दलों में जाए। ये इसलिए होती है क्योंकि हम चाहते है की आपका शरीर बलिष्ठ हो, रोग और बीमारिया आपसे कोशो दूर रहे। आप आज नहीं दौड़ोगे तो कल को जब आप बीमारियों से घिर जाओगे तो डॉक्टर को दिखाने के लिए तुम्हें उनके पीछे - पीछे दौड़ना पड़ेगा। बात तो सही कह रहे है पंडित जी, यदुराज ने भानु से कहा। अब चाहे कुछ भी हो, मैं गिरु या पीछे रहूँ मैं तो दौड़ूंगा।

दूसरे दिन सुबह 4 बजे यदुराज और भानु तो सीटी बजने से पहले ही उठ गये थे, हा उनके कमरे में घड़ी नहीं लगी हुई थी इसलिए वो सुबह 4 बजने वाली सीटी का इंतजार कर रहे थे। सुबह 4 बजते ही दोनों अपने सब साथियो ने साथ निवृत होकर ग्राउंड में पहुंच चुके थे और एक सांस में 3 कोस दौड़ करके प्रार्थना स्थल पहुँचे। पुरी मनोंवृति से भाग लिया क्योंकि वो तो आज नहीं तो कल उन्हें स्वीकार करना ही था, जितनी जल्दी मन से स्वीकार करते उतना ही उन्हें इसका फायदा मिलता। भानु सुन रहे हो आज तो पैर जकड़ रहे है, जवाब ही नहीं दे रहे कैसे पार पड़ेगी दादा यदुराज ने भानु के हाथो से हल्का सा स्पर्श किया। भानु जिसका ध्यान अभी तक मधुसूदन पंडित जी के व्याख्यान पर लगा हुआ था, किन्तु यदुराज के हाथो का स्पर्श पाकर वह हल्का सा सजग होकर देखने लगा। तुमने कुछ कहा यदु ! दादा मैं कह रहा था आज तो पैर शून्य हो गये है, ठीक से बैठा भी नहीं जा रहा। तुम चिंता मत करो यदु, आज हमारा पहला दिन है ना तो कुछ दिन तो ये दर्द करेंगे ही। लेकिन धीरे - धीरे ये सब सामान्य हो जायेगा।

कुछ दिनों बाद चौमासा यानी बरसात का मौसम शुरु होने वाला था। इस महीने में पढ़ाई का महत्व अक्सर बच्चों के लिए कम होकर नैसर्गिक मस्ती उनके लिए ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाया करती है। आज आसमान श्यामल वर्ण का दिखाई दे रहा था, सो गुरुजी ने सब बच्चों से कह दिया की अब आप अपने कमरे में जाकर विश्राम कर सकते हो। सब अन्तेवासी अपने - अपने निर्धारित कक्षों में जा रहे थे। बादल चारो तरफ उमड़ घुमड कर बल खा रहे थे। अचानक एक बादल को देखकर यदुराज बोला " भानु देख तों बादलो में उसका अक्स दिखाई दे रहा है " और यह कहते हुए वह वहा से भागने लगा, भानु और यदुराज के अलावा उस जगह कोई दूसरा था नहीं तो भानु भी उसे रोकने के लिए

उसके पीछे - पीछे भागने लगा। रुक जा यदुराज ! कोई अक्स वक्स नहीं है। "अरें है देख तो सही, वो देख नीली छीन्ट का घाघरा; वो उसकी लाल चोली अरे देख तो, वो उसके गुलाबी होंठ; वो नागिन की तरह बल खाते हुए उसके बालो की लटा देख तो मुझे सब दिखाई दे रहा है यह कहते हुए वह और तेज - तेज से भगने लग गया। रुक यदु ..... अरे नहीं भानु .... देख तो.... उसके बालो में लगी चुडामणि "यह कहते हुए वह रुक गया। अरे उसकी चुडामणि तो मैं लेते आया था चुपके से। उसने ना जाने कहा - कहा नहीं ढूंढा होगा । उस दिन भी जब हम आखिरी बार मिले थे तब वो चुडामणि ही ढूंढ रही थी जो मैंने चुरा ली थी मैंने वायदा किया था अबकी बार शहर से आऊँगा तब तुम्हारी चुडामणि अवश्य लाऊँगा पता नहीं यार भानु उसने चुडामणि खरीदी होगी की नहीं। यह कहते हुए वह सर को पकड़ कर बैठ गया। भानु ने पास आकर थोड़ा गले लगाते हुए तू चिंता मत कर भाई बाजार से जाकर एक दिन दोनों खरीद लाएंगे। बरसात और अंधड़ आने की वजह से आम के फल टूट - टूट कर जमीन पर सैकड़ो की संख्या में फैल गये थे जिन्हे देखकर लगता था की प्रकृति इन टूटे हुए आमो से सीधे वृक्ष उगाकर इस संसार को आम्रमय बनाना चाहती हो। यदुराज..... देख तों..... कितने आम लगे है। हा भानु जब मैं, भव्या, नीरू, रमिया और नवीन पांचो दोस्त बारिश होती थी उसके बाद आम को इक्ठ्ठा करने के लिए पूरे पदमपुरा की खाक छान मारते थे। हाय भव्या ! मेरी भव्या कहते हुए वह आम इक्ठ्ठे करने लगा। भानु ये आम मैं भव्या के लिए इकटठे कर रहा हूँ जब हम मिलेंगे तो उसे मैं ढेर सारे आम दूंगा। इसके बाद दोनों छात्रावास में चले जाते है।

उधर दूसरी तरफ यदुराज को छात्रावास भेज दिया गया तो भव्या का मन पाठशाला में थोड़ा कम लगने लगा । किन्तु इसके बावजूद भी वो पाठशाला आया करती थी । यदुराज को अपने साथ ना पाकर भव्या, नीरू, नवीन, रमिया चारो अक्सर गुमसुम और मायूस रहा करते थे ।

किन्तु नवीन उन सबकी उदासी को दूर करके हसाने की चेष्टा किया करता था । वह कहता यदुराज यहाँ आ जायेगा तो उसे फिर से मार खानी पड़ेगी। और यह धर्मु तो उस पर वैसे ही खुनस खाये हुए है यह तो और भी मोटा डंडा लाकर देगा ताकि उसके और जोर से लगे, अब वहा है तो पिटाई से तो बच रहा है, बेचारे को जवाब भी तों देना नहीं आता, अगर वहा गुरुजी मार भी लगाते होंगे तों कम से कम हमें तो वो नहीं देखना पड़ता । इसके बाद सब एक साथ हँस पड़ते । हँसते हँसते अचानक भव्या की हँसी मायूसी में बदल जाती । 2 साल बीत गये उन्हें, पता नहीं कब आएंगे । यहाँ तो तिल जितना समय ही पहाड़ जैसा लगता है । एक वो है जो टेलीफोन, चिट्ठी, किसी के हाथो से समाचार कुछ नहीं, सब कुछ सोचती हूँ जो मैं ही । उसे भी तो अक्ल दे भगवान वो भी तो मेरी सुध ले, और फिर आँखो से अविरल बहती अश्रुधारा ।

नीरू एक ऊँगली से आंसू पोछते हुए चुप हो जा भव्या, मैंने तो मम्मी को बार - बार यही कहते सुना है की आत्मा सो परमात्मा । हम किसी को अगर दिल से किसी के बारे में जैसा सोचते है वैसा ही वो सोचता है । हम किसी के बारे में अगर अच्छा सोचते है तो वो भी अच्छा सोचता है और अगर हम किसी के बारे में बुरा सोचते है तो वो भी बुरा ही सोचेगा । तू उसको इतना याद करती है तो ये बारिश उधर भी हो रही होगी । ही.. ही...ही... फिर दोनों एक साथ हँस पड़ती है ।

यदुराज को गये कई दिन हो गए थे, लेकिन उसके अभी तक ना कोई चिट्ठी, ना टेलीफोन, ना ही कोई संदेश आया था । इससे उसकी माताजी वैदेही देवी बड़ी बेचैन हो रही थी और उसने कई बार पंडित कृष्णमूर्ति द्विवेदी जी से इस बारे में पूछा भी था की यदुराज की चिट्ठी या कोई संदेश आया क्या, लेकिन कृष्णमूर्ति जी हर बार यही कहकर उसको दिलासा दे देते थे कि अब वह ठीक है और मन पढ़ाई में अच्छा लगा

होने के कारण कभी कभार चिट्ठी लिख दिया करता है वह फिलहाल घर से थोड़ी दूरी बनाकर रहना चाहता है ताकि उसका मन भटककर उसकी पढ़ाई बाधित ना हो। वैदेही देवी जानती थी कृष्णमूर्ति जी ये सिर्फ उनको दिलासा देने के लिए कह रहे है। पहरेदार पवन देशमुख भी अब गुमसुम सा और उदास बैठा रहता है उसे तंबाकू खाने के लिए रोकने टोकने वाला अब कोई नहीं है। उसे तंबाकू खाते हुए यदुराज का टोकना आज उसके ना टोकने से भी बेकार लग रहा है। आज सुबह से ही बारिश की फुहार हवा के साथ पृथ्वी को भिगो रही है। वैदेही देवी ने गरमा गरम पकौड़ी बना कर डाइनिंग पर टेबल पर सजा दी है और उम्मीद लगा कर बैठी है इसकी खुशबू से उसका बेटा खिंचा चला आएगा। एक गाड़ी गई, दो गाड़ी गई इस प्रकार नुक्कड़ के आखिर तक जब सब गाड़ी आ जा चुकी थी तब कृष्णमूर्ति की द्विवेदी जी की गाड़ी पो... पो..... करते हुए घर के अंदर दाखिल हुई। सीमा और अजय ने अपनी माँ को टोकते हुए कहा की मां तुम भी खामख्वाह की चिंता करते हो। भैया वहा ठीक है। सीमा बोली मुझे भी तो देखो हर रक्षाबंधन पर एक राखी मेरी ऐसे ही बच जाती है अब भैया आएंगे तो मैं भी पूरा हिसाब करूंगी दोनों हाथ राखियो से भर दूंगी, बरसो का हिसाब एक दिन में हो जायेगा।

बरसात के मौसम में जब नदी नाले उफान पर थे, बादल उमड़ - घूमड़कर बरखा बरसा रहे थे। एक दिन अन्तवासियो ने इच्छा प्रकट की कि उन्हें महानंदा नदी के दर्शन करने सभी इजाजत दी जाये। दिनिया गार्ड के देखरेख व निर्देशन में सभी अन्तवासियो को पूर्णिया से कुछ दूरी पर महानंदा नदी को देखने की इजाजत पूर्णतः हिदायत के साथ दे दी गई। सभी अन्तेवासी उछलतेकूदते, हो.... हो....करके तेज चिलाते हुए नदी के किनारे छपाछप करते हुए पानी को उलीचने लगे। ये क्या ? अचानक से दीपक का पैर फिसला और वो नदी में गिर पड़ा। बचाओ... बचाओ.... कोई चीख रहा है, कोई चिल्ला रहा है। कोई सहायता मांगने

के लिए इधर - उधर दौड़ने लगा। पानी में से आवाज आई धम्म ..... ये क्या, यदुराज दीपक को बचाने के लिए कूद पड़ा। लेकिन उसे तो खुद तैरना नहीं आता। वह धीरे - धीरे जल की गहराइयों में जाने लगा। देखने वालों की आँखे सकपकाई, हृदय की धड़कने शिथिल होती जा रही थी, भानु चीख पुकार मचाने लगा। मरता क्या ना करता ? खुद को डूबता देख बचाने की जुगत में यदुराज पानी में हाथ पैर इधर - उधर मारने लगा, इसी प्रयास में वह पानी को काटकर सीधा तैरने लगा। पानी की लहरों के बीच उछलते दीपक को बचाकर किनारे ले आया। कोई हाथ पैर दबाने लगा। कोई छाती के बल लिटाकर छाती पर दबाव देकर फेफड़ों में भरा पानी निकालने लगा, थोड़ी देर में सबकी मेंहनत का नतीजा दीपक को होश आया। मैं यहाँ कैसे आया, मुझे पानी से बाहर कौन निकाल कर लाया ? इस तरह से दसियो सवाल एक साथ कर डाले। तुम्हें यदुराज पानी से बाहर निकाल कर लाया है भानु ने प्रतिउतर देते हुए कहा।
महानंदा माई की कृपा थी की तुम बच गये।
दीपक - यदुराज ने, लेकिन उसको तो तैरना भी नहीं आता।

भानु - तैरना बेशक नहीं आता दीपक, लेकिन जब तुम डूब रहे थे तब उसने आव देखा ना ताव, सैकड़ो लोग खड़े थे, जिसमें कुछ तुम्हारे अंतरंग मित्र भी थे जो खड़े तमाशा देख रहे थे, अपनी जान की परवाह किये बिना उसने तुम्हारी जान बचाई थी।

दीपक लगातार यदुराज को देख रहा था, उसके हृदय में पल रही नफ़रत का स्थान पश्चाताप ने ले लिया था, आँखो में बदले की भावना की जगह पश्चाताप के आँसू बह रहे थे, आगे बढ़कर यदुराज को गले लगा लिया। मुझे माफ़ कर दो दोस्त, मैंने आज तक अनजाने या जानबूझ कर तुम्हें बहुत कष्ट पहुंचाया, मुझे माफ़ करो। वर्षो के गिले शिकवे दूर हुए। दो दुश्मनों ने आपस में एक दूसरे को गले लगाया। तुम तो सच में चुंबक हो

दादा ! भानु ने यदुराज को टोकते हुए कहा। हा... हा... ही.... ही....सब एक साथ हँस पड़ते है।

मधुसूदन पंडित जी ने अब रामायण और अध्यात्म की शिक्षा देना शुरु कर दिया था। वैदिक ऋचाओ का गायन अब छात्रावास में गुंजने लग गया था। शास्त्र के साथ ही स्वावलम्बी तथा आत्मरक्षा प्रशिक्षण के लिए तलवारबाजी, घुडसवारी तथा तैराकी आदि का विशेष प्रशिक्षण दिया जाने लगा। एकनिष्ठता तथा गुरुभक्ति के चलते यदुराज शास्त्र और शस्त्र में जल्द ही प्रशिक्षित हो गया। सब शास्त्रों में उसे रामायण सर्वाधिक पसंद थी। तुलसीदास कृत रामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण की उसे एक - एक चौपाई और एक - एक श्लोक उसे कंठस्थ याद था। मर्यादा पुरुषोतम भगवान श्रीराम उसका प्रिय पात्र था। अपने पिता की आज्ञा से निरपराध होकर भी पितृभक्ति निभाने के लिए 14 वर्षो का वनवास भोगने वाला वनवासी राम, जब राजा महाराजाओ में अनेको विवाह करने का प्रचलन था तब भी सीता जैसी पतीव्रता पत्नी के लिए रावण जैसे दुराचारी से भिड़ने वाला राम। वल्कल पहनकर कन्द मूल खाकर वानरो और भालुओ के सहयोग से समुद्र का दर्प चूर करके त्रिलोकविजेता दशानन को धूल चटाने वाला सन्यासी राम। राह को पुष्पो से सुवासित करके पथ निहारती सबरी के बेर खाकर भक्तो के वचन की रक्षा करके समाज में समता का संदेश देने वाला राम यदुराज का प्रिय पात्र व उसकी दृष्टि में प्रातः स्मरणीय प्रथम पूज्य पुरुष था। छात्रावास में अन्तेवासियों का अंतिम वर्ष चल रहा था। कुछ समय पश्चात उनका समावर्तन संस्कार था ।

इसी बीच एक बुरी खबर आई जिस जगह छात्रावास संचालित था वो मधुसूदन पंडित की पैतृक जगह नहीं थी उस पर किसी प्रतिवादी ने दावा कर रखा था, उस केस में मधुसूदन पंडित हार गये। उन्हें आगामी 15

दिवस में छात्रावास की जगह को छोड़कर दूसरी जगह छात्रावास शिफ्ट करना था। पूर्णिया में रहते - रहते मधुसूदन पंडित जी भी उब गये थे इसलिए उन्होंने काशी में रहने का फैसला किया। आनन - फानन में ट्रेन से जाकर काशी में एक बना बनाया मकान देख लिया। हवेली थोड़ी पुरानी जरूर थी, मगर महफूज थी, नया छात्रावास बनाने में समय लगता इसलिए मधुसूदन पंडित जी ने अस्सी घाट के निकट उस हवेली को निश्चित करके आ गये। कुछ दिनों बाद सभी अन्तेवासियो को ट्रेन से लेकर काशी पहुँचे।

अब छात्रावास की दिशा और दशा बदलने से विधार्थियों का मानसिक स्तर भी बदल गया था। पहले जालीदार कमरे हुआ करते थे, अब उनकी जगह चारो तरफ दीवारो से युक्त कमरों ने ले लिया। पहले छात्रावास में अपेक्षाकृत बड़े स्नानागार होते थे, अब छात्रावास की नई जगह में स्नानागार नहीं था अपितू गंगा नदी में ही गंगा घाट पर स्नान के लिए जाना होता था । काशी आने के बाद बंदिशे अन्तेवासियो पर पूर्णिया के बजाय थोड़ी कम हो गई थी। गंगा घाट और अस्सी घाट के निकट तकरीबन 2 कोस का अंतराल था। पहले तो विधार्थियों को अकेले नहीं भेजा जाता था उनके साथ प्रत्येक अवसर पर दिनिया गार्ड को भेजा जाता था। अब दिनिया गार्ड की हस्तक्षेप हर काम में थोड़ी कम करके उनको स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए छुट दे दी गई।

आज यदुराज और भानु दोनों सूर्योदय से पूर्व गंगा घाट पर स्नान के लिए निकले। गंगा घाट पर जगह - जगह भारी भीड़ थी। सुबह वहा की दीप आरती सहज ही मन मोह रही थी। कदम - कदम पर पंडो का जमावड़ा था, आइये जजमान पूजा करवाइये, पितृ ऋण से मुक्ति के लिए तर्पण करवाइये, पिंडदान करवाइये, दीपदान कीजिये पुण्य. कमाइए ..... इत्यादि इत्यादि। भीड़ को चीरते हुए एक खाली सी जगह पाकर दोनों स्नान

करने लगे। गंगा स्नान करने वालों की भीड़ के साथ - साथ लोग अपने प्रियजनों का तर्पण करवाने भी आ रहे थे। आज यदुराज और भानु ने पहली बार गंगा में डुबकी लगाई थी। हर - हर गंगे बोलते हुए दूसरी डुबकी लगाई, गंगा स्नान करने वाले कही पानी में नहीं डूब जाये इसकी सुविधार्थ जगह - जगह लोहे की बेल और छड़ लगाई गई थी ताकि स्नानार्थी उनको पकडकर स्नान कर सके। बेल के दूसरी तरफ जाने का मतलब था खतरा जहा जलस्तर और अधिक गहरा रहा था, दीवारों पर लिखी चेतावनी स्पष्ट शब्दों में देखी जा सकती थी। बार - बार माइक से घोषणा की जा रही थी " यात्री कृपया गहरे पानी में ना उतरे, स्नान के लिए बेल को पकडकर रखे। सब नियमो और चेतावनियो की अनदेखी करके यदुराज गहरे पानी की तरफ चला गया। उधर मत जा यदु .... भानु जब तक पुरी बात बोलता तब तक तो वो जल में तैराकी के मजे ले रहा था। गंगा में घंटो भर तैरना यदुराज का पंसदीदा शौक बन गया था। प्रातः काल में सूर्योदय पूर्व आना, ठीक गंगा आरती के समय बजते शंख - झालरों की आवाज़ इतना सुकून देती थी की घंटे भर तैरने के दौरान भी समय का भान नहीं रहता था।

एक दिन प्रातः काल में यदुराज और भानु जब स्नान को गये तब जैसे ही यदुराज ने पानी में डुबकी लगाई तब अचानक से शंख झालरों की आवाज़ के बीच एक अलग ही प्रकार की आवाज़ महसूस की, यह आवाज़ किसी के नूपुरो की आवाज़ थी। नजरें उठाकर उपर देखा तो एक सतरह बरस की नवबाला सामने खड़ी थी। उसके काले बाल हवा के झोको से उड़ कर चेहरे पर आ रहे थे प्रतीत हो रहा था जैसे सावन के बादलो की घटा ने स्वच्छ आसमान को घेरकर श्यामल कर दिया हो। लम्बा चौड़ा ललाट, मीन सदृश आँखे, लम्बी तूरही नाक, गुलाब की खिली हुई 2 पंखुड़ियों के से दोनों होंठ उनके बीच में चमकते सफ़ेद दाँत प्रतीत होते थे मानों सीप से सफ़ेद मोती बाहर आने को आतूर हो,

गदराया हुआ तन, लम्बी गर्दन,दूध की तरह धवल श्ररीर उसे देखकर लगता था की ना तो इतनी सुंदर ना तो इंद्र की अमरावती की कोई अप्सरा (उर्वशी, मेंनका, रम्भा) और ना ही कुबेर की अलकापुरी की किसी यक्षिणी में ऐसा सौंदर्य देखा था। ब्रह्मा ने बस उसको बनाने वाली सम्पूर्ण मिट्टी ही उसके शरीर में लगाकर किसी और को बनाया ही नहीं हो या फिर कहो तो कामदेव और रती ने सम्पूर्ण सौंदर्य का वर उन्हें ही देकर बाकी संसार को निरीह ही रख दिया हो। कोई देखे तो देखता ही रह जाये। उसको लगातार देखते - देखते ना जाने कितना समय यदुराज को बीत गया। स्नान करके जब भानु ने अपने मीत का ध्यान अन्यत्र पाया तो हाथ आँखो के आगे ले जाकर पूछा " कहा ध्यान नहीं है " दृष्टि में अवरोध आ जाने से यदुराज की तन्द्रा टूटी, कही ध्यान नहीं है और फिर दोनों छात्रावास की तरफ चल दिये।

दूसरे दिन प्रातः काल में ही यदुराज भानु के साथ गंगा स्नान को गया। लेकिन आज वह आनन फानन में ही डुबकी लगाकर पानी में खड़ा रहा। वह प्रतीक्षारत था की वह नवबाला आज भी आएगी। इंतजार खत्म हुआ, थोड़ी देर बाद वह नवबाला भी गंगा स्नान को आई। तब तक गंगा घाट पर अपेक्षाकृत भीड़ थोड़ी ज्यादा हो गई थी, नव नवबाला जल में भीगकर अब पानी से बाहर निकलकर जाने को थी। यदुराज की तो उस सुंदरी से निगाहे ही नहीं हट रही थी। वह सुंदरी भी अपने तीर कमानों का भरपुर इस्तेमाल करके उसे घायल करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही थी।वह कभी सीधी देखती तो कभी तिरछी, जब यदुराज की निगाहे इधर - उधर होती तो वो उसकी तरफ देखती, जब यदुराज उसकी तरफ देखता तो वो इधर - उधर देखती। कभी देखकर मुस्कुराती तो कभी तिरछी नजरो से देखकर नजरें फेर लेती। सदियो से स्त्रियों के यही तो प्रबल हथियार रहे है जिनसे वह बिना किसी तीर कमान के भी पुरुषो का शिकार करती आई है। जो काम तलवार की तेज धार नहीं कर पाती वो काम

एक स्त्री की तिरछी नजरें कर जाती है । तलवार की मार से आर्त व्यक्ति तो सम्भव भी है की बच जाए लेकिन एक नवयौवना के नैन कटारो से पीड़ित व्यक्ति सम्भव ही नहीं खुद को बचा सके । मैं इस सुंदरी के मोह जाल में नहीं फसूंगा, मैं अगर फ़स गया तो बाकी पुरुषो की प्रवृत्ति में और मुझमें अंतर क्या रहेगा, नजरें उठाकर उपर देखा तब तक वो नवबाला जा चुकी थी ।

नहीं.... नहीं.....

मैं इस तरह से तो किसी के आकर्षण में इतना विचलित नहीं हो सकता, जो मुझे खुद को ही नहीं भान की ये हो क्या रहा है,स्त्रियों का तो काम ही है पुरुषो को अपने मोहपाश में फासना अब ये तो उनके खुद के विवेक पर निर्भर है की वे खुद को कितना बचा पाते है,

अभी यदुराज सोच ही रहा था की इतने में भानु ने आकर विचारों में खलल डाला ।

चलना नहीं है क्या भाई ?

देख तो सुरज सर पर चढ़ आया है,

दोनों छात्रावास में चले जाते है ।

दूसरे दिन प्रातः काल एक लड़की जिसने लाल रंग की आस्तीन पहन रखी थी तथा लाल रंग के दुपट्टे से चेहरे को ढक रखा था,

सीढ़ियों के पास आकर बैठ गई ।

वह गंगा स्नान करने आये लोगो में शायद किसी का इंतजार कर रही थी, जैसे ही यदुराज और भानु स्नान करने उतरे वह उन्हें एकटक देखे जा रही थी, इसी दरम्यान उनके साथ छात्रावास से

आये हुए अन्य छात्रों से वह कुछ बातचीत करने में व्यस्त हो गई थी, बातचीत करने से देखने वालों को ऐसा लगता था मानों इनकी बरसो की जान पहचान हो । शायद वो कुछ पूछ रही थी । आज यदुराज की निगाहे चारो तरफ शायद किसे तलाश कर रही थी । बार - बार पानी में गोते

लगाना फिर नजरें उठाकर देखना, आशातीत व्यक्ति के ना दिखाई पड़ने पर फिर गोते लगाना। इन सबके बीच एक बात थोड़ी अजीब हो रही थी वो युवती एकटक होकर घटनाक्रम को देख रही थी। लाल दुपट्टे के बीच उसकी बड़ी-बड़ी आँखे लग रही थी जैसे इन्हें पहले कही देखा हो। काफी जोर देने पर भी याद नहीं आ रहा था। लेकिन वह नव बाला वही थी जो नित्य यदुराज को मिल जाया करती थी लेकिन भानु और यदुराज दोनों ही इस बात से अनभिज्ञ थे। किसी को अपनी लत लगाकर कुछ समय के लिए बिछोह कर लेना शायद शुरुआती दौर से ही प्रेम को प्रगाढ़ करने का माध्यम रहा हो, उसी माध्यम का प्रयोग वह युवती कर रही थी। गंगा स्नान के बाद कुरता पहनकर जब तक यदुराज गली के आखिरी छोर तक नहीं गया तब तक वह युवती उसे देखती रही।

आज छात्रावास में भानु के पापा उससे मिलने आये थे, सब छात्रों ने मिलकर उन्हें चारो तरफ से घेर रखा था, तरह - तरह की प्रतिक्रियाये हो रही थी, सब अपने - अपने घरवालों की बाते सबसे साझा कर रहे थे इस दरम्यान किसी के घरवाले 5 बार मिलने आ चुके थे तो किसी के घर वाले सात बार। केवल यदुराज के घरवाले थे जो इन 7- 8 वर्षो की अवधि के दौरान एक बार भी नहीं आये थे। ऐसा नहीं था की उसे ये सब बाते महसूस नहीं होती थी की जब सबके परिजन उससे इतनी बार मिलने आये और उसके परिजनों ने उसकी खोज खबर तक नहीं ली, परन्तु वह अपना दुःख भी बांटे तो किससे, ना चाहते हुए भी दिल का दर्द आँखो में स्पष्ट दिखाई देने लगा। भानु ने पहचान लिया, किन्तु इस समय वो चुप रहा। शाम के समय जब प्रार्थना से निवृत हुए तब भानु ने पूछा " तुम्हारी आँखो में आँसू क्यों थे यदु " शुरु से लेकर अंत तक का सारा किस्सा एक सांस में कह दिया। माँ वैदेही देवी, पिता कृष्णमूर्ति, भव्या, नीरू और वो सब .....।

तुम चिंता ना करो दादा एक दिन सब अच्छा हो जायेगा,

और वैसे भी छात्रावास में अब अपने दिन ही कितने शेष है, इसके बाद तुम्हारे गाँव की वही सौंधी मिट्टी का आँगन और ये खुली हवा।

अगले दिन गंगा स्नान को प्रातः ही पहुंच गया। गंगा स्नान करने के लिए जैसे ही जल में उतरा, सामने वही नवबाला खड़ी मुस्कुरा रही थी। आज जो भी हो वह इस नवबाला का परिचय जानकर ही रहेगा। आनन-फानन में बाहर निकला, उस नवबाला की हँसी उसकी धड़कनों को शिथिल कर रही थी। जुबान ह्रदय के जज्बातो का साथ नहीं दे रही थी। एक बार नजर घुमाकर दूसरे घाट की तरफ देखा, फिर उस नवबाला की तरफ देखा तब तक वह नवबाला जा चुकी थी। माथा पीटा, हाय मेरी किस्मत, पास रहकर भी मैंने उसका परिचय नहीं जाना जिस प्रकार कस्तूरी हिरण के पास कस्तूरी होती है लेकिन फिर भी वह उसकी कस्तूरी की सुगंध से अनभिज्ञ इधर-उधर भटकता रहता है, उसी प्रकार मैंने उसका नाम - पता जानने की बजाय इधर-उधर की बातों में समय गुजार दिया।

भानु ने पास आकर सांत्वना दी, की आज नहीं तो कल उसका पता पूछ लेना।

अगले कई रोज गंगा घाट स्नान को आते वह युवती नहीं मिली। घंटो भर उसकी राह तकते भी वह नहीं दिखी, मन विचलित हुआ, मस्तिष्क में सैकड़ो सवाल एक साथ कौंध गये, कही उस सुंदरी ने वह शहर तो नहीं छोड़ दिया, कही वह बीमार तो नहीं, इत्यादि .....।

अचानक एक दिन वह नवयुवती अपने 2- 3 सखियो के साथ एक छोटी बच्ची को गोद में लेकर सड़क पार करते दिखी। सड़क पर ट्रैफ़िक ज्यादा होने की वजह से वह युवती उस सड़क को पार ना कर पा रही थी, यदुराज ने आनन फानन में हाथ पकड़ा और सडक पार करवा दी, यह

वही युवती थी जो रोज गंगा स्नान को जाते समय घाट पर मिल जाया करती थी। तुम्हारा नाम क्या है, इतने दिन तुम कहा थी यदुराज ने 2- 3 प्रश्न एक साथ ही कर डाले। थोड़ा सांस लेते हुए वह युवती बोली मेरा नाम मोहिनी है और ये जो गोद में देख रहे हो यह मेरी बेटी है नताशा। यह बीमार थी इस वजह से मैं नहीं आ सकी। तुम शादीशुदा हो यदुराज ने थोड़ा चौकते हुए पूछा। हा ! मैं शादीशुदा हूँ और मेरे वो .. बनारस के सबसे सुंदर युवक है।

थोड़ा मुँह लटकाते हुए यदुराज घमंड ठीक नहीं, आखिरकार मिलना तो मिट्टी में ही है।

इसे घमंड कहो, गुमान कहो या गर्व कहो वो आपकी भाषा लेकिन किसी दिन आईने के सामने आपकी मुलाक़ात करवाउंगी। यदुराज भावार्थ न समझ कर ठीक है कहता हुआ अपनी राह की तरफ आगे बढ़ गया।

तुमने उससे झूठ क्यों बोला प्रियवंदा की तुम्हारा नाम मोहिनी है, दूसरा झूठ ये की तुम्हारी शादी हो चुकी, तीसरा झूठ ये की नताशा तुम्हारी बच्ची है। तुम्हें पता है एक झूठ को छुपाने के लिए कितने झूठ बोलने पड़ते है। " झूठ बोलने का एक नुकसान ये भी होता है की वह झूठ हमें याद रखना पड़ता है क्योंकि अगली बार जब हम बोलेंगे और पहले जिस चीज के बारे में झूठ बोला था अबकी बार सच बोलेंगे तो मारे जाएंगे। प्रियवंदा की सखी मिंटू ने मुहफट कह दिया। प्रियवंदा मुस्कुराते हुए मैंने नाम झूठ बोला इसमें एक रहस्य है शायद अभी तुम नहीं समझ सको, मेरी शादी हो चुकी ये सच है, मैं मन ही मन किसी को अपना मान चुकी और रही नताशा की तो मैं उसकी मौसी हूँ तो वो मेरी बेटी ही होगी ना,मैंने झूठ कहा बोला।

मिंटू - तुमने कहा की तुम मन ही मन किसी को अपना मान चुकी लेकिन किसे, वैसे समझ तो हम भी रहे है लेकिन तुम बता दो तो अच्छा रहेगा।
मोहिनी - मैं कैसे बता दु, मुझे शर्म आती है, वक्त आने पर तुम खुद समझ जाओगी।

मिंटू - लेकिन, मोहिनी तुमने तो रिश्ते की शुरुआत ही झूठ से की है, झूठ से शुरु कोई भी रिश्ता ज्यादा नहीं चलता क्योंकि झूठ के पैर नहीं होते।

ज्येष्ठ का महीना आ चुका था इसी श्रावणी पूर्णिमा को यदुराज और उसके कक्षा सहपाठियों का समावर्तन संस्कार होना था। वातावरण में गर्मी के अलावा आसमान धुलभरी आँधियो से अटा रहता था वातावरण में उमस ज्यादा रहने लगी थी। अस्सी घाट के किनारे भीड़ भाड़ ज्यादा होने से गर्मी की वजह से उकता जाते थे इस कारण मधुसूदन पंडित जी ने सभी को दिन में भी थोड़ा गंगा घाट किनारे घूमने की छुट दे रखी थी। काशी विश्वनाथ के दर्शन और पिंडदान करने आने वाले भक्तो और यात्रियो के कारण वहा भीड़ का जमावड़ा रहता था। सर्पिली वेग सी चलती गंगा की लहरे किसी के भी व्यथित मन को शांत करने के लिए श्रेष्ठ औषधि थी। यहाँ आकर सुकून मिलता था मानो वर्षों के प्यासे मरुस्थल में भटकते राहगीर को जल का स्रोत मिल गया हो।

अगले रोज गंगा घाट पर स्नान के दौरान मोहिनी और मिंटू ने यदुराज के दोस्तों भानु, दीपक, गोपाल इत्यादि को बातों में लगा रखा था। शायद वो उनसे कुछ जानकारी हासिल कर रही थी तभी यदुराज भी भानु के बगल में आकर बैठ जाता है। तुम्हारा घर कहा है मोहिनी ? यदुराज ने पूछा ? तुम्हारा दिल ही मेरा घर है अब तो यदुराज, मेरी कोई चीज अब मेरी नहीं रही वो तुमसे मिलकर तुम्हारी हो गई जैसे नदी का पानी समुद्र से मिलकर नदी का पानी नहीं रहता वह सागरमय हो जाता है ऐसे ही मेरा

सर्वस्व तो तुम चुरा चुके। मोहिनी जिसे तुम प्रेम समझ रही हो वो प्रेम नहीं है वो चेहरे का आकर्षण है, अभी तुमने जाना ही कितना है मेरे बारे में, ये नहीं हो सकता मोहिनी, तुमने बिना कुछ जाने कुछ ज्यादा ही ख्वाब देख रखे है। ख्वाब नहीं देख रखे यदु, मैं जानती हूँ ये सच होंगे, मैं ये भी जानती हूँ इस समय तुम्हारे हृदय में कौन है लेकिन कब तक, जैसे आज मेरे रोम - रोम में तुम्हारा कब्जा है , मेरी साँसों का तार - तार तुम्हें पुकारता है, हृदय में धड़कन की जगह तुम धड़कते हो, जितनी बार तो मैं दिनभर में साँसे नहीं लेती होउंगी जितना तुम्हें याद करती हूँ यदु।

तुम्हारा कहना ठीक है मोहिनी, तुम अपनी जगह भी ठीक हो लेकिन इस जन्म में तो मैं कम से कम किसी और का ऋणी हूँ, जब तक मैं उऋण ना हो जाऊ तब तक किसी के बारे में सोचना भी गुनाह है। पाप - पुण्य को तो मैं नहीं जानती यदु, मैं तो तुम्हारी चरणानुरागिनी बनना चाहती हूँ,क्या इतनी सी जगह भी नहीं है क्या ?

फिलहाल मैं आपके किसी भी प्रश्न का जवाब देने में असमर्थ हूँ मोहिनी, विदा चाहता हूँ, छात्रावास भी जाना है। जाते - जाते एक बात भी सुनते जाओ यदु ! अगर तुम्हारी अर्धांगिनी बनने का सौभाग्य मिला तो मैं मानूंगी की ईश्वर प्रेम तपस्या को सम्पूर्ण करके उसका फल अवश्य देता है अन्यथा सब किताबी बाते है, मैं तुम्हारा इंतजार करूंगी ....।

छात्रावास में वो सब बाते उसके जेहन से निकल नहीं पा रही थी। भानु बातों से कुछ दुःख हल्का करने की कोशिश कर रहा था। एक तो वो है भानु जो इस चेहरे पर आसक्त है, दूसरी तरफ भव्या जो तब भी साथ थी जब कोई मेरे साथ नहीं था, मेरे बचपन की संगी, प्रेम अनासक्त भी होता है और आसक्त भी, प्रेम में आकर्षण भी होता है और विकर्षण भी, मोहिनी का प्रेम आकर्षण से शुरु है और जो प्रेम आकर्षण से शुरु होता है

वो रूप सौंदर्य के ढलते ही विकर्षण में बदल जाता है जबकि भव्या का प्रेम सुरक्षा की भावना से प्रगाढ़तम रूप तक पहुंचा है जो साँसों की अंतिम डोर तक रहेगा। भानु चुपचाप बैठा सुन रहा था। ऐसा कुछ नहीं है यदु... मोहिनी का प्रेम आज भले ही आकर्षण से शुरु हो रहा हो किन्तु सुरक्षा की भावना सुनिश्चित होने के बाद लड़की अपने प्रेमियों पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है, जीवन तुम्हारा है मर्जी तुम्हारी।

आख़िरकार श्रावणी पूर्णिमा के दिन छात्रावास की अंतिम कक्षा के विधार्थियों को विदाई करने का समय सुनिश्चित हुआ। व्यथित और दुःखी मन से सब विधार्थियों ने विदा ली।अब ये भी नहीं पता भविष्य में दोबारा मुलाक़ात होगी भी या नहीं, होगी तो कब होगी और क्या पता नहीं भी हो, बस सब कुछ संभावनाओं पर टिका हुआ था। छात्रावास जीवन की समाप्ति का सूचक आगामी जीवन में आने वाले परिवर्तनों और तूफानों का परिचायक था जहाँ उन्हें समाज में स्वयं की पहचान के लिए एक द्वन्द करना था, खुद को स्थापित करने की चुनौती थी।

अध्याय - ३

श्रावणी पूर्णिमा को छात्रावास से समावर्तन के बाद गाँव लौटते हुए जगह-जगह लगे हिन्दोले, मल्हार गाती महिलाये, रास्ते की हरियाली सब कुछ अलग था, सब कुछ बदला हुआ सा नजर आ रहा था । श्रावण का महीना हो और जेहन में प्रेयसी का स्मरण ना हो ये कभी सम्भव है । वर्षभर का प्यासा चातक (पपीहा) पक्षी भी बरसात में अपने प्रेमी बादल को पी.. पी.. करके पुकारने लगता है । भागलपुर पहुंचते ही मोटरगाडी को थोड़ी देर रुकवाकर यदुराज और ड्राइवर रुक जाते है । आमो के झुरमुट के बीच कुछ लड़किया गीत गाकर झूला झूल रही थी । पास आकर थोड़ा गौर से देखा तो वो लड़की जो उन सबमें महत्वपूर्ण थी शायद किसी बात पर उनसे रूठकर बैठी थी उसकी बाकी सखिया उसको रिझाने का प्रयास कर रही थी । यदुराज उस युवती को देखते ही पहचान गया था परन्तु वह युवती नहीं पहचान पाई, पास आकर थोड़ा घुरकर देखने लगा । अब युवती जो कुछ पहले से नाराज थी कुछ इन बचकानी हरकतो से चिढ गई थी उसका गुस्सा सातवे आसमान पर था, ये क्या हरकत है । नजर उठाकर सामने देखा तो एक उन्नीस बीस बरस का नवयुवक सामने खड़ा था । लम्बा कद, गठीला बदन, नीली आँखे, चौड़ा ललाट, लम्बी भुजाये, मजबूत फड़कते भुजदंड कोई देखे तो देखता रह जाये, किसी तरह खुद को सम्हाल कर वह युवती सामने आ खड़ी हुई । कुछ तमीज नाम की चीज है की नहीं, अब नजरो से खा ही जाओगे क्या ? युवक ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी । युवती का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था,हूँ मुझे क्या, सैकड़ो लोग इस राह से गुजरते है, मैं किस किस के मुँह लगु यह कहते हुए वह नवयुवती पीठ फेरकर उसकी तरफ आकर खड़ी हो गई । युवक जो कुछ देर पहले तक शांत खड़ा था । अपने झोले से एक चुड़ामणि निकालकर झट उस युवती के बालो में लगा देता है, इस अज्ञात हरकत से वह युवती गुस्से में जैसे ही कुछ करने को होती है झट हाथ

पकडकर शांत हो जाओ, भव्या ! इस प्रकार किसी अपरिचित से अपना नाम सुनकर आग बबूला भव्या झटपट अपने बालो में हाथ देती है, चुड़ामणि को हाथ में लेकर गौर से देखती है, पुरानी स्मृतिया मस्तिष्क में कौंध जाती है। यदुराज ... ओ.. यदुराज। कहाँ थे तुम, कितने वर्षो बाद खबर ली, मिले भी तो अजनबी की तरह, तुम मुझे जान गये और मैं पागल तुम्हें पहचान भी नहीं पाई, फिर तुमने भी क्यों नहीं बताया। बरसो के बिछुडे आज मिले थे। जिस प्रकार बरखा रानी के फैलते साम्राज्य में अपने बिलो से बाहर निकले सर्पिणी का फन उठाकर फूफकारते हुए एक दुसरे लिपट जाते है उसी प्रकार यहाँ वर्षो के संगी साथियो ने हृदय से लगकर एक दूसरे को सीने से सटा रखा था, थोड़ी देर में बरसात शुरु हो चुकी थी बारिश के बाद दोनों अपने - अपने घर पहुँचे।

पुरा परिवार पलक पावडे बिछाकर कबसे इंतजार कर रहा था। माँ वैदेही देवी, दादी चारुल देवी, बहन सीमा, भाई अजयराज सबसे जी भरकर मिला व ढेर सारी बाते की। घर में केवल पंडित कृष्णमूर्ति की बातों से नहीं लग रहा था की बेटा इतने साल बाद लौटा है तो उसके प्रति कुछ व्यवहार बदला या फिर कुछ और। यहाँ आकर वो फाइनली अपने बचपन के मित्र रमिया और नवीन से मिला वो दोनों भी बहुत बदल चुके थे, नवीन अब राजनीति में सक्रिय हो चुका था वही रमिया अपना पुस्तैनी धंधा सम्हालने लगा था। भागलपुर और पदमपुर के बींच आमो का एक बड़ा सा बागान पड़ता था वही यदुराज और भव्या ने मिलने का ठिकाना बना रखा था, दोनों का प्रेम विशुद्ध प्रेम था, काम वासना व विकार की तो छायामात्र भी उन्हें ना छु पाई थी। घंटो भर साथ रहने के बाद भी दोनों का प्रेम निष्पाप था लेकिन दुनिया का दस्तूर होता है अच्छी चीजों की जरूरत सबको होती है फिर जो उसका हकदार होता है उसको उसके भाग्य से वंचित रहना पड़ता है। भव्या की गोद में उसके आँचल की छाव में सोए हुए यदुराज को देखकर उसकी प्राथमिक पाठशाला के चपरासी

करणसिंह ने बातों को अनावश्यक बढ़ाकर उसके घरवालों को बता दिया, कृष्णमूर्ति द्विवेदी तो पहले ही ताव खाये हुए थे कुछ उन्हें शिकायत मिल जाने से बहाना मिल गया, सुनाने लगे अपनी पत्नी को " मैं कहता नहीं था की इसके लक्षण ठीक नहीं है, पता नहीं क्या - क्या गुल खिलायेगा ? अब तो आनन फानन में इसकी शादी कर देनी चाहिए जब कुछ घर गृहस्थी की जिम्मेदारी आएगी तो कुछ समझेगा । कृष्णमूर्ति द्विवेदी जी का इतना बड़ा परिवार भला उससे कौन रिश्ता नहीं जोड़ना चाहे, इतनी जमीन - जायदाद की सात पीढ़ी भी कुछ ना करे तो बैठा खाए। अच्छे घरो से सैकड़ो की संख्या में रिश्ते आना शुरु हुए उन सब रिश्तो को छोड़कर पंडित कृष्णमूर्ति द्विवेदी जी ने उनमें से एक रिश्ता पक्का कर दिया और अपने बेटे को हिदायत देते समझाया" तेरे लिए हमने रिश्ता देख लिया है, लड़की ऊँचे कूल की है, लाखो में एक है, अब तू कितना भी जतन करे तेरा विवाह इसी के साथ होगा। भव्या के प्रति चल रहे अनुराग की वजह से यदुराज को इन सब बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, भव्या के अलावा उसका दिल अन्य किसी को स्वीकारने के लिए कतई तैयार ही नहीं था। वो भी बार - बार एक ही जिद्द पर अडा था मैं भव्या को मन ही मन पत्नी मान चुका, अब सांसारिक रूप से मेरा विवाह होगा तो भव्या से अन्यथा किसी से नहीं।

ये नहीं हो सकता, हम द्विवेदी ब्राह्मण और वो ठहरी जाति की महाजन ये नहीं हो सकता, दोनों में संबंध कभी नहीं हो सकता, पूर्व और पश्चिम में संबंध एक दूसरे के पूरक होते है एक साथ नहीं होते, अगर लड़की ब्राह्मण कूल की भी होती तो भी मैं सौ बार सोचता की हमारे बराबर वाली जमात में है या नहीं और यहाँ तो जात ही अलग है, तुम्हारा विवाह श्रीपाद महाजन की पुत्री से कदापि नहीं हो सकता, स्पष्ट शब्दों में चेतावनी देकर पंडित कृष्णमूर्ति द्विवेदी बाहर चले गये।

कुछ दिनों तक इसी बात को लेकर पिता पुत्र में कोई बोलचाल नहीं हुई। दशहरे पर शस्त्र पूजन के बाद तलवारबाजी के खेल का आयोजन किया जाना था जिसमें आसपास के नामी गिरामी तलवारबाज अपना जौहर दिखाने आ रहे थे। खेल शुरु हुआ, आख़िरकार में आखिरी मुकाबले की तलवारबाजी में एक युवक को सात तलवारबाजो से अकेले लड़कर अपना शौर्य दिखाना था, जब कोई खड़ा नहीं हुआ तब द्विवेदी जी के लाडले ने ताल ठोकी, लोगो ने समझाया की पंडित जी ये शस्त्र चलाना तुम्हारे बस का नहीं है ये क्षत्रियो का काम है, तुम तो शस्त्र के बजाय शास्त्र में पारंगत रहो। लेकिन उन सबकी बातों को अनसुना करके यदुराज ने सातो तलवारबाजो को एक मुहूर्त से भी कम समय में चारो खाने चित कर दिया, उसके युद्ध शौर्य को देखकर लग रहा था की 7 क्या अगर 70 तलवारबाज भी होते तो वह उन्हें नहीं छोड़ता। इससे आसपास के सब जगह उसकी तलवारबाजी के जौहर की चर्चा फैल गई।

अगले रोज जब यदुराज और भव्या अपने निर्धारित किये गये स्थान पर मिल बैठकर बाते कर रहे थे, तब भव्या के मन में अनेको आशंकाये और सैकड़ो प्रश्न थे। हमारी शादी को आपका परिवार स्वीकार नहीं करेगा यदु... ! और आपके अलावा पर पुरुष का मैं चिंतन भी नहीं कर सकती क्योंकि भारतीय नारिया मन से किसी को एक बार अपना सर्वस्व मान ले तो फिर सामने साक्षात् इन्द्र ही क्यों ना हो वे उसके अलावा अन्य किसी का वरण नहीं करती। भव्या मैं भी तुम्हारे अलावा पत्नी के रूप में अन्य किसी का वरण नहीं कर सकता, तुम बचपन की संगी हो, मेरी हमराज हो, मेरी हमदर्द हो मैं भला किसी ऐसे पराई लड़की को पत्नी के रूप में कैसे चुन सकता हूँ, तुम सुंदर हो यदु, तुम्हारे पास हजारों विकल्प है, कही तुम किसी के आकर्षण में मोहित होकर मुझे भूल बैठे तो। इत्मीनान रखो भव्या अगर मेरी शादी कही होती है तो तुमसे अन्यथा कही नहीं। इस प्रकार एक दूसरे के प्रबल प्रेम के वशीभूत होकर दोनों एक दूसरे से

अटूट वायदा करते है। झरना, पेड़, खुला आसमान उनके निष्काम प्रेम के साक्षी होते है।

चैत्र नवरात्रि को होने वाली दुर्गा पूजा 9 दिनों तक सुरंग वाले कालिका मंदिर में हुआ करती थी, जिसमें प्रथम पूजा करने का अधिकार द्विवेदी परिवार को था तत्पश्चात समाज के सम्भ्रान्त वर्ग को था सामाजिक रूप से पिछड़े तथा अछूतों को पूजा में शामिल होने का अधिकार ना होकर केवल पूजा के बाद लंगर बनाकर बंटने वाली प्रसादी पाने का अधिकार था, रामनवमी को होने वाली राम पूजा में भी उन्हें शामिल होने का लेशमात्र भी अधिकार नहीं था। इस बार यदुराज ने डंके की चोट पर सबके सामने कह दिया था की इस बार सर्वप्रथम पूजा करने का अधिकार उन लोगो को रहेगा जिनको आज तक वंचित रखा गया, किसी को अगर आपत्ति हो तो वो उनका सामना कर सकता है। शरीर में अतूलनीय बल, अद्वितीय तलवारबाज, साथ में मिल रहा अछूतों का पुरा समर्थन भला किसकी मजाल जो शेर के मुँह में हाथ देकर उसके दाँत गिनने की धृष्टता कर सके। सम्भ्रांतो की मीटिंगे होना शुरु हुई, कई सैकड़ो वर्षो की प्रतिष्ठा दाव पर लग रही थी, अब तक जिन्होने इंसान को इंसान नहीं समझा था वे स्वयं की सत्ता को खतरे में देखकर तरह - तरह के उपाय खोजने लगे। मिलकर फैसला हुआ इस मशवरे पर द्विवेदीजी की सूचित करके आगे की कार्यवाही उन पर ही छोड़ देनी चाहिए।

द्विवेदीजी एक तो गाँव के सम्भ्रान्त लोगो के अगुआ दूसरा अगर कालिका मंदिर में उनके परिवार के अलावा अन्य किसी के हाथो से पूजा होती है तो ये सबसे बड़ी हार उनके परिवार जी होगी, जिस पूजा को करने के उनकी कई पीढ़िया तक प्रथम अधिकारी रही आज वो कोई और करेगा। भगवान ऐसी औलाद तो किसी को ना दे जो अपने ही पिता के खिलाफ बगावत कर दे। अपने बेटे को पहले तो खूब समझाने की

कोशिश करने लगे, द्विवेदीजी ने इस दौरान पुत्र धर्म की सतयुग से त्रेतायुग तक के आदर्श पुत्रो का उदाहरण सामने रख दिया, लेकिन पुत्र भी कहा कम था लड़ाई धर्म व अधर्म की थी और फिर गीता में तो जब अर्जुन ने अपने ही संबंधियों के खिलाफ लड़ने से मना कर दिया तो भगवान ने भी उसे धर्म के लिए किसी से भी लड़ जाने की प्रेरणा दी, यहाँ कुछ तो गलत था। अपनी बात ना बनती देख द्विवेदी जी ने चालाकि का सहारा लिया, उनका पुत्र उनके कहने के अनुसार तो शादी करने वाला था नहीं तो सोचा क्यों ना श्रीपाद महाजन की पुत्री भव्या से ही विवाह संस्कार सम्पन्न करा दे उसके बाद तो ये मेरे मनमुताबिक चलेगा। श्रीपाद महाजन से मिलकर दोनों परिवारों ने एक दूसरे के साथ सगाई पक्की कर दी, सगाई और विवाह के बीच सालभर का फासला रखना तय हुआ। यदुराज और भव्या का आज खुशी का ठिकाना नहीं था, आज उनकी हर मुरादें पुरी हो रही थी, भविष्य में होने वाली घटनाओ से बेखबर दोनों भविष्य की योजनाए बना रहे थे वैसे भी भगवान ने किसी मानव को भविष्य में देख सकने की क्षमता इसलिए नहीं दी होगी ताकि वह उसके चक्कर में अपना वर्तमान तो कम से कम ना खराब करे ।

चैत्र माह शुरु हो गया, शुक्ल पक्ष शुरु होते ही नवरात्र शुरु थे, नवरात्र के कुछ महीनों बाद यदुराज और भव्या का विवाह सम्पन्न होना था। कालिका मंदिर में होने वाली पूजा को लेकर मुनादी करवाई जा चुकी थी की इस बार पूजा गाँव के पिछड़े और शोषित लग अग्रपूजा करने के अधिकारी होंगे क्योंकि उन्हें पिछड़ेपन का डर दिखाकर आज तक वंचित रखा जाता रहा है। गाँव के सम्भ्रान्त और प्रतिष्ठित लोगो ने अनेको प्रकार से यदुराज को समझाने की कोशिशे की गई, धमकिया दी जाने लगी मगर सब बातों को दरकिनार करके आज प्रथम दिवस की पूजा सम्पन्न करवाकर वह और उसका भाई अजयराज देर रात चन्द्रमा की छाँव तले गाँव के गहरे जंगल से होते हुए लौट रहे थे। रह – रह कर जंगल में सियार

और श्वानों की आवाज़ के साथ उल्लुओ का शोर रास्ते की वीरानियों को और बढ़ा रहा था । सन्नाटे को चीरते हुए किसी के करुण चित्कार का शोर कानों में रह - रहकर आ रहा था । किसी अबला स्त्री की पुकार आ रही है दादा ! आपने महसूस की क्या ? अजयराज ने अपने भाई यदुराज को कहा । थोड़ा रूककर, तलवार म्यान से निकली, आ तो रही है अजय ! दोनों आवाज़ की दिशा में चलते है । दोनों के पास जाने पर कुछ आदमी वहाँ मौजूद थे जो कदमो की आहत पाकर भाग निकले, गहरी झाड़ियों के पीछे एक औरत को एक पेटी के अंदर बंद करके रस्सियो से बाँध रखा था । चेहरे पर खरोचो के गहरे निशान थे जिन्हे देखकर लग रहा था शायद उससे जबरदस्ती की कोशिश की गई थी, चेहरा स्पष्ट रूप से न देखा जा सकता था जिस कारण पहचान नहीं हो रही थी लेकिन यदुराज का दिल जोरो से धड़क रहा था कद काठी को देखकर वह युवती भव्या ही लग रही थी । आनन - फानन में उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया, डॉक्टरों ने बचने की कोई गुंजाइस नहीं बताई । युवती को होश तो आ चुका था लेकिन उसके पास वक्त कम रह रहा था । यदु.... ! होश में आते ही युवती ने पुकारा । नर्स जो उसकी दवा दारु के लगी हुई थी आनन - फानन में बाहर आकर उसे होश आ गया । वह किसी यदु... को बुला रही है । कलेजा फटा जा रहा था, पैरो तले से जमीन खिसक गई, भगवान करे वह नहीं हो किसी तरह खुद को सम्हाल कर दोनों भाई अंदर गये । यदु.... आ गये तुम ! चलो इस इत्मीनान से तो चली जाउंगी की अंतिम समय तुम्हारे साथ गुजारा है । इस आवाज़ को वह हजारों बार सुन चुका था, लाखो की भीड़ में पहचान सकता था । आँखे डबडबाई,नहीं भव्या ! क्या बोलती हूँ तुम, कुछ नहीं होगा तुम्हें, अभी कुछ दिनों बाद तो हमारी शादी है । ये सब हुआ कैसे ? तुमने मंदिर में आज जो सब किया उससे गाँव के बड़े - बड़े लोग तुम्हारे दुश्मन बन गये, उनमें इतनी हिम्मत तो थी नहीं की तुम्हारा मुकाबला कर पाते । मुझे संदेशा भिजवाया गया की आमो की बगिया के पास उस वाले मैंदान में तुम मुझे

बुला रहे हो। हर बार हम वही मिलते थे लेकिन इस बार साजिश थी, रंजिश थी इन सब बातों से बेखबर मैं वहाँ आ गई। वहा घात लगाकर बैठे करणसिंह, भैरोसिंह पांडे, लूटनसिंह इत्यादि सब ने ..... बोलते बोलते रुलाई फुट पड़ी। सुनते ही दोनों भाइयो की भुजाये फड़की, बड़े ने तलवार म्यान से बाहर निकाली, एक अंगुष्ठ तलवार पर रखते ही हाथ से रक्त निकल आया उसे मांग पर सजाकर अब तुम मेरी परिणीता हो भव्या। मैं उन सब को छोडूंगा नहीं। एक गहरी सांस लेकर ओह यदु....। तो इस नाते मैं तुमसे कुछ माँगने की भी अधिकारी हूँ। हा भव्या जरूर। मेरी साँसों के हर तार पर तुम्हारा पहरा है, तुम कुछ भी मांग सकते हो ये एक ब्राह्मण का वचन है। अभी कुछ दिनों पहले तुम्हारे पिता ने जो रिश्ता पक्का किया था तुम उस लड़की से पाणिग्रहण कर लो। थोड़ा गुस्से में, क्या कह रही हो तुम ? मेरी विवाहिता तुम हो, और शादी कोई खेल नहीं जो आज इसके साथ कल इसके साथ। वैसे भी भव्या स्त्रिया सब कुछ बाँट सकती है इस दुनिया में अगर बांट नहीं सकती तो सुहाग। मैं जानती हूँ यदु, लेकिन मेरे जीवन की यात्रा बहुत कम है और तुम्हें बहुत शिखर पर जाना है।

इस लम्बे पड़ाव की यात्रा के दौरान कोई हो जो तुम्हारा ख्याल रख सके, तुम्हारा दुःख बांट सके, तुम्हें अकेलापन महसूस नहीं हो। "प्रेम सुरक्षा की भावना चाहता है"।

और व्यक्ति जिससे प्रेम करता है उसको वह हर हाल में सुरक्षित देखना चाहता है। इसी सुरक्षा की भावना के नाते भव्या ने वो सब मांग लिया। सोच क्या रहे हो यदु..... ! अगर दे नहीं सकते तो मना कर दो मैं इसी दुःख के साथ चली जाउंगी की मैंने आखिरी समय में कुछ माँगा और तुम वो भी नहीं दे सके। मैं नहीं चाहते हुए भी तुम्हारे आगे मजबूर हूँ, ठीक है

वचन दिया। एक गहरी सांस लेकर भव्या पंचतत्वों में विलीन हो जाती है।

कुछ दिनों बाद सब सामान्य हो जाने के बाद कृष्णमूर्ति द्विवेदी ने यदुराज का रिश्ता काशी के सुदर्शन पंडित की पुत्री प्रियवंदा से कर दिया, ये वही प्रियवंदा थी जो काशी में गंगा घाट पर मोहिनी थी, इसी ने जिद्द करके अपने पिता को कहा था रिश्ता होगा तो यदुराज के साथ अन्यथा जिंदगी भर कुंवारी रहूंगी। उधर भव्या के वियोग से यदुराज में संसार के प्रति अनासक्ति का भाव पैदा हो गया था। लड़की की तस्वीर देखे बिना घर वालों की स्वीकृति और भव्या की अंतिम इच्छा व प्रदत्त वचन मानकर शादी के लिए सहमति प्रदान कर दी। उसकी नजरें करणसिंह, भैरोसिंह पांडे इत्यादि को ढूंढ रही थी। अपने अंजाम की खबर से वाकिफ करणसिंह, भैरों सिंह पांडे समेंत उनके सभी साथियो ने खुद को पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था। यदुराज के प्रतिशोध से अच्छा है ना कुछ साल की सजा भुगत कर मौत से तो बच जाये। पंडित कृष्णमूर्ति जिस न्यायालय में जज थे उसी न्यायालय में उन सब मुजरिमो की पेशी होनी थी। द्विवेदी जी ने तो पर शादी की स्वीकृति ही अनमने मन से दी थी, मन ही मन तो वो बहुत खुश हो रहे थे किन्तु न्यायाधीश थे, ना चाहते हुए भी उन्हें उन मुजरिमो को सजा तो देनी थी अतः उन्होंने उम्रकैद या फांसी की सजा के बजाय सभी को महज 5 साल की सजा मुकर्रर की, अपने प्रेम के प्रति हुई इस नाइंसाफी से दुःखी यदुराज ने पिता का घर छोड़ दिया। माता वैदेही देवी समेंत भाई और बहन ने रोकने के लिए हजार मिन्नते की लेकिन उसकी भी जिद्द थी की वह अब लौट कर इस चौखट पर नहीं आएगा। सुदर्शन पंडित तक यदुराज ने संदेशा भिजवा दिया की पहले मैं न्यायमूर्ति पंडित कृष्णमूर्ति द्विवेदी का बेटा था , अब मैं पथान्वेषी (रास्ते का अन्वेषण या खोज) करने वाला महज एक युवक, ना कोई ठिकाना - ठांव, ना खुद की पहचान। क्या इसके बाद भी आप

अपनी बेटी का पाणिग्रहण मुझसे करना चाहोगे। उतर स्वीकृति में मिला। विवाह के बाद सुदर्शन पंडित ने यदुराज को बंगला, और जमीन की पेशकश करते हुए घर जमाई बनने का आग्रह किया लेकिन उनके इस भाव को अपने स्वाभिमान के सामने अस्वीकृत करके यदुराज ने शहर में एक भाड़े का मकान ले लिया।

जिंदगी में अब समस्याओ का आगमन हो गया था। पहले जिनके महल जैसे घर में सैकड़ो कमरे थे अब किराये के घर में रहने लगे थे, जहा कई तरह के व्यंजन घर में बनते थे वहाँ अन्न के दाने के दर्शन दुर्लभ हो गये थे, जिनके घर में कई नौकर व कामदार 24 घंटे रहते थे वो खुद दुसरो के घर नौकरी ढूंढने वाला था। सारी लड़ाई बस स्वाभिमान की थी। अभी तक प्रियवंदा से यदुराज की कोई वार्ता नहीं हुई थी, वो इस बात से बेखबर था की यह वही बनारस के गंगा घाट की मोहिनी है। शाम को भोजन के समय मुलाक़ात हुई, नवोढा का तो अभी तक चेहरा भी नहीं देखा था। शाम को भोजन के समय प्रियवंदा का चेहरा देखते ही यदुराज विस्मित हो गया, यह वही मोहिनी थी जो गंगा घाट पर नित्य मिला करती थी। बिना भोजन किये जाने लगा, प्रियवंदा चरण पकड़ कर बैठ गई, प्रिय भले ही मेरा हजार बार तिरस्कार करो किन्तु भोजन का तिरस्कार मत करो। तुम जूठी हो कभी प्रियवंदा तो कभी मोहिनी। भव्या को भी शायद तुम्हारी ही नजर लग गई। इस समय आप कुछ भी कह सकते हो आपको कहने का अधिकार है किन्तु मैं भव्या का बुरा चाहूंगी या सोच सकती हूँ ये सोचना भी आपका गलत है।आपको कुछ दिखाती हूँ, अपने बस्ते से भव्या की तस्वीर निकाली, और डबडबाई आँखो से उसे एक आले में रख दिया।

मुझे माफ़ करो मोहिनी, मैं तो तुम्हें इसी नाम से जानता हूँ बस, तुम भव्या से कितना प्रेम करती हो मैं तो ये तक नहीं जानता था।

दोनों की आँखो से अश्रुधारा बह रही थी, पति पत्नी के कर्तव्य के आगे खुद को छोटा महसूस कर रहा था, पत्नी पति के दुःख से दुःखी थी। मैं भव्या का स्थान नहीं ले सकती, मेरे लिए वो मेरी बड़ी बहन के समान है। कभी हम समृद्ध हुए तो भव्या के नाम से बहुत कुछ करेंगे हम।

तुम साक्षात् त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति हो मोहिनी ! मैं तुम्हें आश्वास्त करता हूँ कभी तुम्हें दुःखी नहीं होने दूंगा।

अगले रोज काम की तलाश में कई महाजनों की दुकानों और कार्यशाला में यदुराज ने चककर काटे किन्तु अनुभव ना होने की वजह से कही काम नहीं मिला। थक हारकर जब वो घर जा रहा था तो एक गाड़िया लुहार के गाड़े के पास सुस्ताने लगा, लुहार जो कभी धौंकनी चलाता तो कभी घन के हथोड़ा मारता। वह अकेला ही दो व्यक्तियों के बराबर काम करने की कोशिश में लगा हुआ था। बाहर यदुराज को देखकर बोला क्या तुम घन के हथोड़ा मारने में मेरी मदद करोगे, मैं तुम्हें पहले ही बता देता हूँ 2 घंटा हथोड़ा मारने के सौ से ज्यादा रुपये नहीं दूंगा। अंधा क्या चाहे, 2 आँखे, ठीक है काम कोई भी हो ; करने में क्या शर्म, इस बात का फक्र तो है की अपने 2 हाथों से मेंहनत करके खा रहे है किसी के सामने हाथ तो नहीं फैलाने पड़ रहे। 2 घंटे घन पर हथौड़ा मारते - मारते हाथो पर छाले पड़ गये। कभी काम ना करने की वजह से सांस तेजी से फूल रही थी, पर पेट पालने की भी तो जुगत है।

शाम को अपनी पहली कमाई लेकर पत्नी के हाथों में रख दी, झूठ बोलते हुए कहा आज से मैं किसी सेठ के यहा मुनीमाई करने लग गया। मोहिनी ने रुपये लौटाते हुए कहा ये काम आपके लायक नहीं है वैसे तो, आप ठहरे एक चित्रकार, हृदय के भावो को कैनवास पर उतारने वाला हिसाब में पक्का नहीं होगा, जब तक आपकी चित्रकारी का काम अच्छे से ना

चलने लगे तब तक ही मुनीमाई ठीक है। मेरी मानों तो एक ब्रश, रंग व पेंटिंग बनाने की सामग्री ले आओ। बाजार से रंग, ब्रश, इत्यादि सामग्री ले आया। दिन में लुहार की धोंकनी में घन पर हथौड़ा पीटता और रात में चित्रकारी। पहला चित्र बड़ी फुरसत से बनाया, लेकिन इतना शानदार चित्र, तस्वीरे ही बोल पड़ती थी। कई दिनों तक प्रसिद्ध चित्रकारों की कार्यशाला में बेचने का प्रयास किया। लेकिन सब उसके औने- पौने दामों में ही खरीदना चाहते थे। मन मसोसकर रह गया, क्या मेरी कला को परखने वाले पारखी भी मिलेंगे या नहीं ? क्योंकि जब तक एक कलाकार को उसकी कला का उचित पारिश्रमिक नहीं मिलता तब तक वो अंधेरे में ही पथभ्रष्ट रहता है। लोहार की धौंकनी में काम करते हुए एक दिन उधर से गुजरते हुए द्विवेदीजी ने देख लिया, घर चलो यदु ..... ! तुम्हें परिवार की इज्जत का जरा सा भी ख्याल नहीं है, लोग सुनेंगे तो हँसेंगे की न्यायमूर्ति द्विवेदी का बेटा लोहार का काम करता है। आप आज भी अपने बेटे को लेने नहीं आये पापा, आज भी आप अपने मेरे इस काम से कम होते अपने रुआब रुतबे को बढ़ाने की कोशिश करने आये थे। अगर मेरी इतनी ही फ़िक्र होती तो अपनी बहू के गुनहगारो को सख्त सजा दी होती। आँखे होते हुए भी सत्य को ना देख सकने वाला भी सूरदास ही होता है। तुम भूल रहे हो यदु.... मैं बाप हूँ तुम्हारा, इन नीच लोगो के काम करते करते तुम बड़ो से बात करने की तमीज भी भूल गये। घर के दरवाजे खुले है, आना चाहो तो आ सकते हो, कहते हुए द्विवेदीजी अपनी गाडी में बैठकर चले गये।

तकरीबन एक महीने बाद एक सेठ की निगाह यदुराज की उस तस्वीर पर पड़ी। ऐसी कला जो आज तक उसने नहीं देखी थी, लाखो रुपये दाम देकर उसने वो तस्वीर खरीद ली और उसे शहर की प्रदर्शनी में लगवा दिया। अब उस कलाकार के नाम की चर्चा पूरे शहर में थी। कल तक गुमनामी की जिंदगी जीकर गुजर बसर करने वाला यदुराज अब मशहूर

चित्रकार बन चुका था। जिंदगी हर किसी को तराशती है, पतझड के बाद बाद नए पलाश भी आते है।

अब उसकी बनाई हुई एक एक पेंटिंग लाखो में बिकती थी। पेंटिंग तैयार होने से पहले खरीदने वाले ग्राहकों में खरीदने को लेकर होड़ रहती थी। शहर से दो कोस दूर यदुराज ने भगवान श्रीराम का माता सीता व लक्ष्मण सहित एक भव्य मंदिर बनवाया व मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करवाई, जहा पूजा के लिए कोई परिवार विशेष या वर्ग विशेष का ही दबदबा ना रहकर सबको समान अवसर मिलता था। इसके बाद तो अनेको मंदिर बनवाये गये, प्याऊ लगवाई गई। आज शादी को पुरा एक साल हो गया था। शाम को काम से जल्दी निवृत होकर मोहिनी के लिए कुछ आभूषण लेकर यदुराज घर पहुंचा। आपसे कुछ मांगू, आज हमारी शादी की सालगिरह को एक साल हो गया, आप मना तो नहीं करोगे।
तुम अर्धांगिनी हो मोहिनी, तुम्हारा अधिकार है।

मोहिनी - आपने अपनी मेंहनत व बलबूते से अपनी तरक्की को इतना बढ़ाया है आज आपका नाम व परिचय किसी का मोहताज नहीं है, मैं समझती हूँ इन सबमें एक शख्स का विशेष महत्व है।
हाथों को चूमकर, हा जानता हूँ मोहिनी ! तुमने किन परिस्थितियों में साथ दिया है।

मोहिनी - मैं अपनी बात कर ही नहीं, मैं तो भव्या की बात कर रही हूँ। अगर वो बचपन से आपके जीवन में नहीं रहती तो आप यहाँ नहीं रहते। मैं तो उसकी ऋणी हूँ। चाहती तो साथ रहकर पूजा और सेवा करना चाहती थी। परन्तु मेरा ऐसा सौभाग्य कहा। काश वो हमारे साथ होते, उनके जितनी अच्छाईया तो नहीं है मुझमें फिर भी उनसे कुछ सीख पाती। अब तो चाहती हूँ आप भव्या के नाम पर एक ऐसा हॉस्पिटल बनवाओ

जहा सबका इलाज मुफ्त में हो सके। " अपने लिए तो जिंदगी जानवर भी जी लेता है, रही बात भोजन की तो वो तो कोई भी पेट भर लेता है इंसान वही है जो दुसरो के लिए जीना सीखे "।

तुमने मांगा भी तो क्या मोहिनी। वो तो मैं बिना मांगे भी दे देता। भव्या मेंमोरियल हॉस्पिटल पूर्णिया के साथ - साथ अन्य एक दो शहरों में भी स्थापित किया गया। अपनी आय के 90 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा वो दुसरो के निमित्त खर्च किया करता था। विवाह के तकरीबन 2 साल बाद एक पुत्र की प्राप्ति हुई। आज घर का कोना - कोना खुशियों से चहक रहा था, छोटे यदुराज के आने से घर में बधाई देने वालों का ताँता लगा हुआ था । आज शहरभर में इतनी भीड़ थी की कदम रखने की जगह भी नहीं थी। एक साल बीतने पर लगातार यदुराज का स्वास्थ्य स्तर गिरता जा रहा था। मोहिनी के बार - बार कहने पर शहर के आनंद हॉस्पिटल में इलाज के दौरान सारे शरीर की जांच के दौरान पता लगा वह ब्लड कैंसर से जूझ रहा है। डॉक्टर ने स्पष्ट हिदायत दी आप आप इस समय इसकी चपेट में इतने ज्यादा हो बच सकने की कोई उम्मीद नहीं है, जितना हो अपने परिवार के साथ समय बिताओ। हद मार कर 6 महीने आप बस जिंदा रहोगे । अपने मन की व्यथा को मन में दबाकर यदुराज घर गया। डॉक्टर साहब ने क्या बताया मोहिनी ने तुरंत जाते ही प्रश्न किया । कुछ नहीं शरीर में कमजोरी बताई है। रुको एक दूध का गिलास लाती हो, दूध पकड़ाते हुए आप मानते किसकी हो। खुद का ख्याल तो रखते हो नहीं बस काम ही काम।

आज से मैं घर ही रहकर तुम्हारी और रोनित की ही देखभाल करूंगा। ब्लड कैंसर की बात उसने सबसे छुपा रखी थी, वह अपने परिवार की आँखो में आंसु नहीं देखना चाहता था।

समय के साथ बीमारी का असर गहराता जा रहा था। चार महीने बीत चुके थे अब वह ज्यादा समय नहीं रहेगा, वह अपने गाँव की मिट्टी में अपनी मातृभूमि की छाँव में अंतिम सांस लेना चाहता था किन्तु बात स्वाभिमान की थी द्विवेदीजी के घर भी नहीं जाना चाहता था।

मैं अपने गाँव जाना चाहता हूँ मोहिनी, वहा की मिट्टी मुझे बुला रही है। पति पत्नी दोनों रास्तेभर की तैयारी करके निकल पड़ते है। गाँव के पास पहुंच कर आमो की बगिया के पास मोटरगाडी को रुकवा देते है। तुम जानती हो मोहिनी, ये जगह हमारे बचपन की बेहतरीन यादो की साक्षी है। अपने लंगोटिया मित्र नवीन के घर कुछ दिन के लिए रुक जाते है। पंडित कृष्णमूर्ति द्विवेदी को किसी तरह सूचना मिल जाती है की उसका बेटा अब इसी गाँव में है। माँ वैदेही देवी जिद्द करती है की वो नहीं मान रहा तो आज आप ही उसे मना कर ले आओ, मेरा दिल बहुत घबरा रहा है। जब गाँव तक आ गया तो आज नहीं तो कल घर भी आ जायेगा वैदेही।

उधर दूसरी तरफ आज यदुराज के सुबह से ही छाती में भयंकर दर्द हो रहा था। छाती पर दबाव महसूस होने से लग रहा था अंदर कुछ घुट सा रहा है। खांसी चलने पर रुमाली मुँह के लगाकर खाँसने पर खून आया। कही कोई देख तो नहीं रहा, सबसे नजरें बचाकर रुमाली फेंक दी। आज शायद मेरा अंतिम समय है। रोनित अभी तक सो रहा था उसको कसकर आलिंगन किया, मोहिनी के मस्तिष्क को चूमा। ख्याल रखना मोहिनी अपना और रोनित का, मैं एक लम्बी यात्रा पर जा रहा हूँ। आज यदुराज का व्यवहार थोड़ा अजीब सा लग रहा था। वह यदुराज के पीछे - पीछे जाने लगी, बताओ भी कहा जा रहे हो, आज आप ऐसी अजीबो - गरीब बात क्यों करते हो। दौड़ते दौड़ते और सवाल करते - करते वह द्विवेदीजी के घर के पास तक आ गये। घर से तकरीबन बीस कदम दूर घर के बाहर

खून की उल्टिया शुरु हो जाति है। मोहिनी चीख पुकार मचाकर सहायता के लिए चिल्लाती है। द्विवेदीजी के घर का पहरेदार पवन देशमुख बाहर आकर देखता है तो यदु खून की लगातार उल्टिया किये जा रहा है। शीघ्रता से जाकर अंदर समाचार भेजता है। शरीर में कमजोरी होने से यदुराज निढाल होकर गिर जाता है, मोहिनी गोद में सर रख लेती है। क्या हुआ आपको। अभी हॉस्पिटल में चलते है, आप जल्द ही ठीक हो जाओगे। अब दुनिया की कोई वैधशाला मेरा इलाज नहीं कर सकती मोहिनी। तुम्हें तकलीफ ना हो इसलिए बताया नहीं मैं ब्लड कैंसर से जूझ रहा था अपने अंतिम समय में हूँ। तब तक द्विवेदी परिवार सहित आसपास के लोगो का जमावड़ा हो जाता है। मैं एक अच्छे बेटे का फर्ज निभाते हुए आपकी आज्ञा का पालन नहीं कर सकता बाबूजी, क्या करे जो दुसरो का फैसला ठीक से नहीं करते मजिस्ट्रेट बाबू वक्त उनसे उनकी ही औलादो के साये तक को छीन लेता है, मुझे माफ़ करो। मोहिनी और रोनित को तो परायेपन का अहसास मत करवाना मेरी तरह, मेरी आखिरी ख्वाहिश तो पुरी करोगे ना बाबूजी। मिट्टी को हाथों में लेकर सबके दिलो में धडकने वाली धड़कन अब बंद हो चुकी थी। जाने वाला एक लम्बी यात्रा पर जा चुका था। मैंने सबके साथ न्याय किया बेटा यदु एक सिवाय तुम्हारे,और आज जब मुझे मेरी गलती का अहसास हुआ उसे देखने के लिए तुम जिंदा नहीं हो। तभी भीड़ में से आवाज आती है यदुराज मरा नहीं है, जिंदा है, हमारी धड़कनों में धड़क रहा है।